जून
१९४४
दीदी
वार्षिक मूल्य ३)
एक प्रति ।)
स्त्रियों और लड़कियों के लिये
कोष में धन जमा कीजिये । यह धन भारतीय स्त्रियों की शिक्षा में व्यय होगा

पत्र-व्यवहार का पता

प्रेमलता देवी संचालिका "दीदी" इलाहाबाद

विषय सूची

जून, सन १९४४

'दीदी' के नियम

(१) 'दीदी' मासिक पत्रिका है। इसका वार्षिक मूल्य ३) और एक प्रति का ।) है।

(२) पत्र-व्यवहार करते समय ग्राहकों को अपना ग्राहक नम्बर अवश्य लिखना चाहिये। पत्र-व्यवहार का पता यह है—संचालिका 'दीदी', कटरा, इलाहाबाद।

(३) 'दीदी' हर महीने में पहली तारीख को प्रकाशित हो जाती है। पहली तारीख के आस पास यदि 'दीदी' आपको न मिले तो आपको तुरन्त अपने डाकघर से पूछना चाहिए। अगर पता न लगे तो १५ तारीख के भीतर संचालिका को लिखना चाहिये।

(४) यदि एक दो मास के ही लिये पता बदलवाना हो तो डाकखाने से प्रबन्ध कर लेना चाहिये। यदि साल भर या अधिक काल के लिये पता बदलवाना हो तो उसकी सूचना मय ग्राहक नम्बर के हमें देना चाहिये।

(५) लेख, बदले के पत्र समालोचना के लिये पुस्तकें आदि 'दीदी', कटरा प्रयाग के पते से भेजना चाहिये।

(६) न छप सकने की हालत में सिर्फ वे ही लेख आदि लौटाये जा सकेंगे जिनके लिये साथ में आवश्यक स्टाम्प भी रहेगा।

हमसे पूछिये ?

'दीदी' का मुख्य ध्येय प्रत्येक स्त्री को हर मामले में उचित सलाह देना है, प्यारी बहन! यदि आपके सामने कोई समस्या हो, तो तुरन्त हमें पत्र लिखिये। आपके प्रश्न का समुचित उत्तर भेजा जायगा। इसकी कोई फीस नहीं है। उत्तर के लिये आपको -)॥ के टिकट के साथ एक लिफाफा भेजना चाहिये, जिस पर आपका पता लिखा हो। हमारे कुछ विशेषज्ञों के नाम उनके विषय के साथ इस प्रकार है—

सौंदर्य और फैशन—श्यामा बाई। प्रेम और विवाह सम्बन्धी—रमादेवी टंडन। स्वास्थ्य और रोग सम्बन्धी—गोपालदेवी। होमियोपैथी—डाक्टर एस० के० दत्त। ज्योतिष—गिरीश।

नोट—इस सम्बन्ध के सब पत्र व्यवहार गुप्त ... हैं अतएव निःसंकोच लिखिये। कुछ प्रश्नोत्तर ... छपते हैं पर नाम किसी का नहीं छापा जाता ... इनमें से जिससे आप चाहें मारफ... इलाहाबाद के पते से पत्र व्यव...

भारतीय स्त्रियों और कन्याओं की सबसे अच्छी और सबसे सस्ती सचित्र मासिक पत्रिका

विहार, बीकानेर, जोधपुर, कोटा, ग्वालियर, यू० पी० की सरकारों द्वारा कन्या-शालाओं के लिये स्वीकृत।

वर्ष ५ | इलाहाबाद, जून, १९४४ | संख्या ६

छोटे-बड़े

लेखक. श्री रामगोपाल विजयवर्गीय

दीन जनों से बढ़ कर हैं क्यों, बड़े कहाने वाले नर।
लघुता और महत्ता केवल, एक प्रश्न के दो उत्तर॥
मानवता अभिमान हमारा, वे 'सर' की पदवी से सज्जित।
हमें दुःख अपनी कृषता का, भार उन्हें है पीन उदर॥
वे हैं धनी और हम निर्धन, पर अनुभव करते दुर्बलता।
हमें रोटियों की है चिन्ता, उन्हें बड़े साहब का डर॥
हम वाहन विहीन अपने ही, पैरों पर चढ़ कर चलते हैं।
किन्तु, चढ़ी रहती है उनके, कन्धों पर उनकी मोटर॥
समय हमारे, आदेशों का अनुचर रहता।
शासन करता है, वही समय उनके ऊपर॥
परिश्रम, जब जैसा अवसर मिलता है।
पर उनके ऊपर यम जैसा, बैठा रहता है दफ़्तर॥
जीवन में है कर्म और हम. इससे कभी स्वतन्त्र नहीं हैं।
किन्तु दया के पात्र बड़े जो, किसी बड़े जन के नौकर॥
हम यदि उनके घर जायें तो, पाँव न आगे रख पाते हैं।
वे भी खड़े प्रतीक्षा करते, निज प्रभुओं की बाँधे कर॥
पूँजीवालों को भय है, निज महलों की दीवारों का।
किन्तु हमारी रक्षा को प्रस्तुत है, सतत हमारा घर॥
वे जीने के लिये मर रहे, हम मर मर कर जीते रहते।
दोनों ही के जीने में तब, रहता है कितना अन्तर॥
उनके अभिमानों के सम्मुख, हम क्यों अपना शीश झुकायें।
उन्हें मुबारक गद्दे मसनद, हमें टाट बा ही

एक आत्म-कथा

काले बादल में छिपा चाँद

लेखिका

श्रीमती स्वदेश्वरी देवी अग्रवाल

श्रीमती स्वदेश्वरी देवी अग्रवाल विश्वमित्र के सञ्चालक बाबू मूलचन्द जी की पत्नी हैं! विश्वमित्र को वर्तमान रूप देने में उन्होंने बाबू मूलचन्द जी का पूरा साथ दिया है। यदि वे मुसीबत के दिनों में अडिग न रहतीं और धैर्य से काम न लेतीं तो 'विश्वमित्र' की इतनी उन्नति सम्भव नहीं थी। उनके साहस, धैर्य, त्याग और लगन की ओर प्रत्येक भारतीय नारी का ध्यान जाना चाहिये। इसीलिये हम यह लेख विश्वमित्र के रजत जयन्ती अंक से यहाँ उद्धृत कर रहे हैं। यह लेख उन्होंने अपने पुत्र श्री कृष्णचन्द्र अग्रवाल के अनुरोध से खतरे में ... लिखा है।

जब मैं अपनी पूजनीया सास जी के मुँह से बीती कथा सुनती थी तो मुझे उनकी बातों पर आश्चर्य होता था। जब वे मुझे बताया करती थीं—"बेटी! मैंने बड़ी मुसीबत से लल्ला को पाला है। जब ये आठ साल के थे तो पाँच सेर आटा की पुटरिया इनके माथे पर रख कर घर से आधी रात को उरई के लिये रवाना कर देती थी और कहती थी, बेटा, बहादुर की भाँति चले जाओ और मैं घर में ईश्वर से प्रार्थना करती थी कि हे ईश्वर! शेर बाघ से उसकी रक्षा करना।" जब वे कहतीं—"बेटी! वह आठ कोस का जङ्गल है जहाँ से उन्हें गुजरना पड़ता था।" तो मैं उनसे अनुरोध करती, "माँ जी! मुझे भी वह जगह दिखा दो।" वे कहतीं—"पागल! तुम वहाँ पर किस तरह जाओगी।" आह! क्या उस समय माता जी को यह मालूम था कि उनका लड़का आटा की पुटरिया लेकर कलकत्ता तक पहुँचेगा और वहाँ विश्व का प्रेमी बन कर सारे सगत से नाता जोड़ेगा। यह क्या मनुष्य का कर्म कहा जायेगा? नहीं, केवल उसी परमपिता परमात्मा की लीला ही कही जा सकती है। जिसके पिता अपने लड़के को छ साल में छोड़ चल बसे और भाई बिरादरी ने नाता तोड़ लिया, जिसके आगे नाथ न पीछे पगहा, उसका साथी ईश्वर ही था और रहेगा।

× × ×

अफीमचौरास्ता १३, नारायणबाबू लेन में हमारी शादी हुई। जब मैं आयी तो 'विश्वमित्र' और 'साम्यवादी' पत्र निकलते थे। उसी समय असहयोग आन्दोलन छिड़ा और दनादन लोग जेल भरने लगे। फिर क्या था? इधर बाबू साहब ने भी हमें फुसलाना शुरू कर दिया। कहने लगे कि "अब तुम कहो तो मैं भी जेल जाऊँ। देखो हमारे सब साथी चले गये और हम रह गये।" इधर अखबार में भी रोज रोज छपता कि अमुक स्त्री ने अपने पति को माला पहनाई, अमुक की माँ ने आशीर्वाद दिया। बस फिर क्या देर ... उत्साह आ गया और एक दिन जब ... साहब आफिस में थे तो मैंने बैठे बै... जाओ, मेरे प्यारे वीर बन ...

धीर धर कर चले जाओ ! मेरे प्यारे अपने वचन को अटल रख कर तुम सेवा करो। तुम्हारा उपकार ईश्वर करेगा।" मैं तो लिख कर मेज पर रख कर सो गई। उतने में बाबू साहब ने आकर पर्चे को छिपा दिया। मैंने लाख मिन्नत की, किन्तु फिर उन्होंने नहीं दिया। जब माँगती तब कहते कि अब तो म्यान से तलवार निकल गयी। खैर, थोड़े दिन बाद किसी लेख पर वारण्ट आया और बाबू साहब ने खुशी-खुशी जेल यात्रा की। उधर कृष्णचन्द्र चार महीने का पेट में था। हमारी सास जी भी घवड़ातीं और हमारी माँ आई। चाचा आये। चाचा ने बाबू साहब से जेल में कहा कि आपके नाम से माफी माँग कर हम आपको छुड़ा लेते हैं तो बाबू साहब ने बड़ा ही रूखा जवाब दिया कि तुम समझ लो कि हम इस दुनिया में नहीं हैं। हमारी माँ तथा चाचा रोकर चले आये, और हमसे कहने लगे, "बेटी ! तुम्हारी ऐसी अवस्था है। तुम यहाँ पर रह कर क्या करोगी। चलो भागलपुर।" हमने उन्हें उत्तर दिया, "चाचा ! यहाँ पर बूढ़ी सास को छोड़ कर मैं कहीं नहीं जा सकती हूँ।" तब वे हमारे ऊपर बिगड़ गये और चले गये।

जब बाबू साहब जेल जा रहे थे तो बहुत से महाशयों ने अपनी छाती पर हाथ रख कर कहा था कि आप निश्चिन्त होकर जेल जायें। हम आपके परिवार की रक्षा करेंगे। परन्तु उधर बाबू साहब के जेल जाते ही सब लापता हो गये। अब कोई देखने वाला न था। जब लड़का छः महीने का पेट में था, तो मैं सख्त बीमार हो गई। उसी बीमारी में ही तीन महीना बाद 'कृष्ण' हुआ। अब हमारी सास चारों तरफ के झंझट के मारे घबड़ा कर मुझसे कहने लगीं—"देखो भागलपुरवाली ! मैं तो बहुत घबड़ा गई हूँ। तुम अपनी माँ के यहाँ चली जाओ और मैं कहीं तीर्थ स्थान चली जाऊँगी।" उस समय कृष्ण हो गया था और हमारी तबीयत बहुत खराब थी। मारवाड़ी अस्पताल वाले श्याम बाबू डाक्टर और कार्तिक बाबू डाक्टर लेकर अस्पताल के मैनेजर हमें दिखाने आये तो उन्होंने देख कर [illegible] ची ! यह बहू नहीं बचेगी।" हमारी हालत यहाँ [illegible] कि एक साल तक चारपाई पर पड़ी रहती थी और खाना नहीं खाया जाता था। घाव मुँह से लेकर कलेजे तक हो गया था। परन्तु मुझे यह बराबर याद रहता था।

"धीरज धर्म मित्र अरु नारी।
आपतिकाल परखिये चारी॥"

इसी को गा कर माँ जी से हाथ जोड़ कर कहा—"माँ जी ! मैं असल स्वदेश्वरी हूँ, तो यह हमारी लोहे की लकीर है कि जब तक आपके लड़के इस दरवाजे पर नहीं आ जायँगे, तब तक मैं इस मकान से बाहर नहीं होऊँगी। आपको जैसा भी उचित दीखे, आप करें। उन्होंने फिर मुझे यह भी कहा कि तुम्हारे खाने-पीने का कहाँ से प्रबन्ध होगा। तो मैंने उत्तर दिया कि यदि आफिस देगा कुछ. तो खाऊँगी यदि जेल से कुछ इन्तजाम कर देगें तो खाऊँगी, नहीं तो माँ-बेटा दोनों इस घर में भूखों मर जायेंगे, पर कहीं नहीं जायेंगे। हमारे चले जाने से यह लोहा लकड़ी जो है, वह भी खत्म हो जायेगा। जब उन्होंने देखा कि यह तो नहीं जायेगी तो हमें छोड़ कर वे कैसे जातीं ?

उसी विपत्ति में भारत के सुप्रसिद्ध धनी और एक देश भक्त की कुर्की आई। एक घोड़ा गाड़ी जो थी, उसको भी गाँधी जी के पुत्र हीरालाल जी गाँधी को दे दिया गया। कहा गया है—

'विपत बराबर सुख नहीं, जो थोड़े दिन होय।
इष्टमित्र अरु बन्धु जित, जान पड़त सब कोय॥"

वास्तव में यह विपत्ति न थी, यह एक शिक्षा का समय था और वह दिन कट गये पर जिन्दगी के लिये शिक्षा मिल गई।

× × ×

एक साल जेल यात्रा करने के बाद बाबू साहब घर लौटे। तब अपने 'विश्वमित्र' को बहुत बुरी दशा में पाया। फिर से उन्होंने सूखी जड़ में पानी सींचना शुरू किया। ईश्वर की कृपा से पेड़ का पनपना शुरू हुआ और उस पेड़ की हरियाली बढ़ती चली जाती है। ईश्वर से निवेदन है कि इसी तरह इस पेड़ की छाया में हमारा परिवार सुखमय जीवन काटे।

———

'सहानुभूति'

लेखिका, कुमारी किरनदेवी, बीकानेर

मैं हाथ धोकर तौलिये से पोंछ रही थी कि मेरी नजर घड़ी पर पड़ी। २ बज रहे थे। मैंने सोचा, कितना काम करना पड़ता है। सुबह सात बजे आओ। तब से बीमारों का ताँता लगा रहता है। पहिले तो इतने बीमार न थे। पहिले १२ बजे काम समाप्त हो जाता था। परन्तु अब तो अभी तक चैन नहीं मिलती। फिर शाम को ४ बजे से रात के ६ बजे तक। यह सब सोचते सोचते मैंने नौकर से कहा—'हमारे ड्राइवर से कहो, हमारा बेग ले जाय और चले।'

नौकर लौट कर ही नहीं आया था व मैंने अस्पताल के कोट के बटन खोलने के लिये हाथ बढ़ाया था कि एक दरबान हाजिर हुआ। मालूम पड़ रहा था कि 'कारपोरेशन' का जमादार है। उसने मुझे सलाम किया। मैंने पूछा—'क्या है?'

वह कहने लगा—'सरकार, एकभुखमरी का मरीज है।'

मैंने डाट कर कहा—एक मरीज, एक मरीज करते तो यह समय हो गया। क्या अब हम लोगों को भी मरीज बनाने का इरादा है। चौदह घण्टे ड्यूटी देते हैं। खाने को अच्छा सामान मिलता नहीं है। अजीब भुखमरी की बीमारी है। हम लोग क्या करें, इसका तो सरकार इन्त-जाम करे। ये लोग खुद तो मर ही रहे हैं, हम लोगों को भी मार कर छोड़ेंगे। तुम्हें क्या अभी इसे यहाँ लाना था।'

इतना सब तो मैंने उसे जोश में कह दिया। परन्तु उसी समय मुझे अपने गुरुदेव प्रोफेसर साहब के शब्द याद आये। वे कहा करते थे—'सेवा तुम्हारा धर्म है। चाहे जितनी मुसीबतें तुम्हें उठानी पड़ें परन्तु रोगी की सेवा अवश्य करो। अपने सुख व आराम को रोगी के कार्य के सामने कुछ महत्व मत दो। अपना जीवन रोगी के लिये खतरे में डाल दो। डाक्टर को ये सब बातें अपनानी चाहिये—आ[illegible]'

मुझे शर्म मालूम पड़ी। मैंने दरबान से पूछा—'वह कौन रोगी है।'

'सरकार यह तो सब मालूम नहीं। डिप्टी साहब ने कहा—'बड़े बाजार से सेठ लक्ष्मीचन्द का टेलीफोन आया है। उसके घर के सामने एक भिखमङ्गा बेहोश पड़ा है। उसे ले आओ। यदि जिन्दा हो तो अस्पताल में पहुँचा दो और यदि मर गया हो तो उसके लिये इन्तजाम करो।' सरकार हम उसे लेकर आये है।'

मैंने कम्पाउण्डरों को बुला रोगी को लिटाने के लिये कहा। इतने में ही ड्राइवर आया और कहा—'बेग लेकर चलूँ।'

मैंने कहा—'ठहरो, अभी एक मरीज और देखना है।'

उसके बाद उस रोगी के पास गयी। उसकी हालत बहुत चिन्ताजनक थी। मालूम पड़ रहा था कि काफी देर से बेहोश है। मैंने उसको उस समय दवा आदि दी। और जमादार से कहा, इसको यहाँ भर्ती किया जाता है, इसका इलाज काफी दिन चलेगा।

जमादार सलाम कर चला गया। मरीज को अभी तक होश नहीं आया था।

उसके बारे में कम्पाउण्डरों को हिदायतें देकर घर भै चली गई।

× × ×

आज दो दिनों के बाद मैं अपने मरीजों को देख कर उसके पास पहुँची तो देखा, उसे अभी तक होश नहीं आई थी। मैंने उसको होश में लाने के किये अनेक कोशिशें कीं तब उसको थोड़ी सी चेतना हुई और कहने लगा—'बाबू जी, एक पैसा, खाने के लिये रोटी, रो[illegible] बाबू जी ....नहीं (मेरी ओर ध्यान [illegible] नहीं बीबी जी, कुछ रहम करिये।'

मुझे उसकी दशा पर काफी [illegible]

शान्त होने को कहा—'यह अस्पताल है ।' वह लेट गया । मैंने नर्स को उसे हर प्रकार का आराम पहुँचाने को कह चली गई ।

× × ×

दस दिनों के बाद उसकी हालत काफी सुधर गई । मैंने उससे पूछा—'अब कैसे हो ?'

उसने कहा—'डाक्टर साहब अब तो काफी अच्छी तरह से हूँ । आपने मेरे लिये बहुत कष्ट उठाया, मैं आप का कर्ज कैसे अदा कर सकूँगा । परन्तु—

'ओह ! ये तो मेरा कर्तव्य था, परन्तु तुम और क्या चाहते हो ?' मैंने उसकी बात काटते हुये पूछा ।

वह कहने लगा—'डाक्टर साहब आपने मुझे बचाया यह तो अच्छा किया; परन्तु मैं मर जाता तो अच्छा था ।'

'ये क्यों ?'

'मैं बहुत बड़ा दुखिया हूँ ।'

'तुम्हारे दिल में इतना बड़ा दर्द छिपा है, जो मरना चाहते हो । परन्तु क्या उसकी कहानी सुनाओगे । यदि हाँ, तो मेरे साथ दुपहर में मेरे बङ्गले चलना ।'

'मैं तैयार हूँ ।'

'अच्छा ।'

× × ×

दोपहर को मैं उसे अपने साथ घर ले आई थी । वह अपनी कहानी सुनाने लगा—'मैं ......गाँव का रहने वाला एक किसान था । मेरे घर का काफी बड़ा कुटुम्ब था । एक रोज बड़ी भयङ्कर बाढ़ आई । हमारे घर बार खेती आदि सब चौपट हो गये । मैं, मेरी औरत और बच्चे जिन्दा रहे । जीवन का कोई साधन नहीं था । गाँव में मजदूरी करने की कोशिश की—भीख माँगी, परन्तु कुछ नहीं हुआ । हम लोग निराश होकर शहर आये । रास्ते की मुसीबतों व भूख के मारे मेरी औरत व बच्चे एक एक करके चल बसे । मैं ही इन तकलीफों को सहने के लिये केवल जिन्दा रहा ।'

मैंने आत्महत्या करने की सोची परन्तु फिर मरा न गया ।

मैंने शहर में घर घर मजूरी ढूँढ़ी परन्तु किसी ने आश्रय नहीं दिया । कहने लगे—'लफङ्गा होगा ।'

बाद में भीख माँगने के लिये तैयार हुआ । बड़े बड़े लोगों के पास गया परन्तु दुतकारा गया । बड़े बड़े होटलों, सिनेमाघरों, नाटकों के सामने खड़ा होकर माँगने लगा । परन्तु किसी ने कुछ नहीं दिया । सिनेमाघरों के सामने खेल में जाने के लिये लङ्गर के लङ्गर खड़े हैं । रुपये के टिकट के सात रुपये देने को तैयार हैं परन्तु भूखे को चार पैसे देने को तैयार नहीं ।

मैंने सोचा, चलो चौरङ्गी की तरफ चलें । शायद वहाँ कुछ मिल जाय । वहाँ बड़े बड़े बाबू रईस लोग आते है । किसी तरह से वहाँ गया । परन्तु मेरे भाग्य से वहाँ भी मेरी ओर कोई ध्यान देने वाला नहीं था । वहाँ सब लोग अपने अपने में मस्त थे । मेरी ओर क्यों कोई ध्यान देता ? मुझे भूख बहुत जोरों से सता रही थी । मुझमें खड़े रहने की ताकत नहीं थी । इतने में ही मुझे मोटर का धक्का लगा । बेहोश हो गया । बाद का हाल मुझे मालूम नहीं ।'

'उसके बाद तुम्हें यहाँ लाया गया व मैंने तुम्हारा इलाज किया । मुझे तुम्हारे साथ बड़ी सहानुभूति है, यदि तुम चाहो तो मैं तुम्हें नौकरी दे सकती हूँ । तुम मेरे बच्चों की देख भाल किया करो । क्यों तुम्हें मंजूर है ?'

वह तैयार हो गया ।

× × ×

प्रायः मैं सोचती हूँ कि मैंने यह एक अच्छा काम किया है और इससे मुझे शान्ति मिली है ।

ग्राहकों को सूचना

...र महीने की पहली तारीख को निकल जाती है । यदि किसी महीने की दीदी आपको पहले ही हफ्ते में ...म हो गई । उस दशा में तुरन्त डाकघर से पूछताछ कीजिये और हमें भी ... जिये ।

यदि आप सुन्दरी बनना चाहती हैं !

स्वर्ग क्या है ? वह गृह जिसमें सुन्दरी स्त्री का वास हो। नरक क्या है ? वह मकान जिसमें कुरूप स्त्री रहती हो। अब आप सोचें कि आप अपने घर को क्या बनाना चाहती हैं ? स्वर्ग या नरक ! निश्चय ही आप अपने निवास को स्वर्ग बनाना चाहती हैं। तब एक ही उपाय है। सुन्दरी बनें।

आप पूछ सकती हैं कि सुन्दरी बनना क्या सहज है ? मैं कहूँगी, हाँ ! यदि आप चाहें तो एक मिनट में ऐसी सुन्दर बन सकती हैं कि सारा संसार आपके चरणों का

दाहिने पैर के पंजे पर शरीर को तौलो। बाँए पैर को प... फिर पीछे की ओर ले जाओ

फिर यही व्यायाम बाँए पैर के पंजे पर खड़ी होकर करो। इस व्यायाम से दोनों पैर स्वस्थ, सुन्दर और सुडौल बन जाते हैं।

सेवक बन जाय और आप न चाहें तो एक मिनट में इतनी कुरूप बन सकती हैं कि सारा संसार आपसे घृणा करने लगे। जरूरत सिर्फ इस बात की है कि आप सौंदर्य के रहस्य को समझें। इस लेख में मैं वही बताना चाहती हूँ।

यदि आप सौंदर्य चाहती हैं तो अपने मन के भीतर अच्छे विचार पैदा करें। किसी कवि ने ठीक ही कहा है—

अच्छे कपड़े काम न देंगे,
　अच्छे जो न विचार हुए।
कलई चढ़ जाने से सोना,
　कब ताँबे के तार हुए ॥

फिर अपने आपको उन विचारों की तस्वी... । सीता, सावित्री, दमयन्ती, राधा, रुक्मिणी ... सुन्दरी स्त्रियाँ थीं। इनका सौंदर्य इनके ... बना था। कैकेयी ने एक बार जब ... राजा दशरथ को वह इतनी ... होने
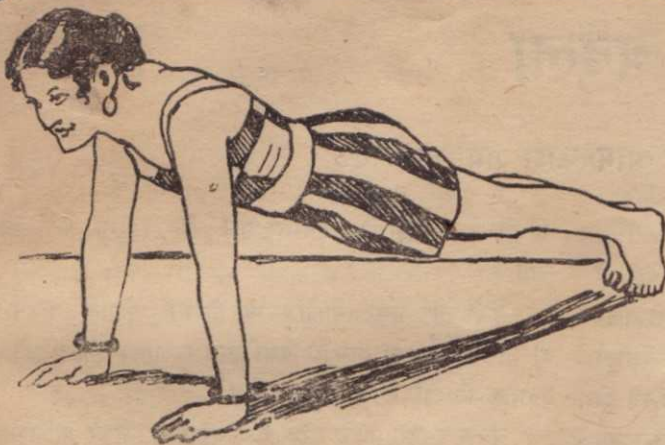
फर्श पर पेट के बल सीधी लेट जाओ। हथेलियाँ आगे की ओर रहें। फिर दोनों पैरों के पंजों और हथेलियों पर जोर देकर क्रमशः शरीर को फर्श से ऊँचे उठाओ। हाथों को क्रमशः पाँवों की ओर ले जाओ। यहाँ तक कि पूरा बोझ पैरों पर जा पड़े और हाथ भी फर्श से ऊपर उठ जायँ। इस व्यायाम से कुछ ही दिनों में बाँह, छाती, और स्तन स्वस्थ्य और सुडौल हो जाते हैं।

उसे अपनी रानी बनाया और उसी कैकेयी ने दूसरी बार जब बुरा काम किया तो उन्हीं राजा दशरथ को वह इतनी कुरूप जान पड़ी कि वे उसको देखते ही मर गए। सुन्दर विचार ही वास्तव में शरीर को सुन्दर बनाते हैं। मुस्लिम नेता जिन्ना एक समय में कितने सुन्दर दिखाई पड़ते थे। तब उनके विचार सुन्दर थे। आज वे कितने कुरूप दिखाई पड़ते हैं। कारण सिर्फ एक है। अब उनके विचार सुन्दर नहीं हैं।

अतएव प्यारी बहन, यदि आप सुन्दरी बनना चाहती हैं तो अपने मन में अच्छे विचार पैदा करें और आइना लेकर उसी समय देख लें कि आपका चेहरा कितना सुन्दर हो गया है।

दूसरी चीज है, मनहूसियत छोड़ें और प्रसन्न रहें। ... लाख पाउडर मलें आप सुन्दर नहीं दिख सकतीं ...ा मुस्करा दें और देखें कि रात का दिन हो ...हीं। मन की प्रसन्नता भी अच्छे कार्यों पर ही ... आपके विचार अच्छे होंगे, कार्य अच्छे होंगे तो मन में प्रसन्नता का सागर लहरा उठेगा और आपके होठों पर अपने आप मुस्कान फूट-फूट पड़ेगी।

अपनी भावना को इस प्रकार दृढ़ बना कर अपने शरीर को स्वस्थ और सुडौल बनावें। जिस प्रकार अच्छे विचार सौंदर्य के लिए जरूरी हैं उसी प्रकार अच्छे भोजन भी सौंदर्य के लिए जरूरी हैं। अच्छे भोजन वे हैं जिनसे रक्त शुद्ध होता है और उसकी वृद्धि होती है। दूध, दही, मक्खन, गेहूँ की रोटी, दलिया, हरे साग जैसे लौकी, मूली, पालक, चौराई, टमाटर स्वादिष्ट फल जैसे आम, अंगूर, सेब, संतरा, नींबू आदि सब रक्त को शुद्ध और पुष्ट बनाते हैं अतएव सौंदर्य वृद्धि के लिए इन चीजों को खाना जरूरी है। इनके विपरीत भोजन से शरीर कदापि सुन्दर नहीं बन सकता। अच्छे भोजन, अच्छे विचार और फिर कुछ अच्छे व्यायाम भी जरूरी हैं। एक व्यायाम जो मैं स्वयं करती हूँ इस लेख में दे रही हूँ। मुझे तो इससे पूरा लाभ हुआ है। इन चित्रों को देखें, इनके नीचे लिखी पंक्तियों को ध्यान से पढ़ें और इस व्यायाम को प्रतिदिन प्रातः काल १०-१५ मिनट करें।

— कुमारी ज्ञानवती एम० ए०

बदला

अनुवादक, श्री ओमप्रकाश शर्मा एम० ए०

(१)

मंसूर नामक एक युवक ने काहिरा में एक बार दो कोयलों को पिंजड़े में बन्द कर अपनी खिड़की के बाहर लटका दिया। उनकी मीठी आवाज से वहाँ के खलीफा के एक सिपाही का ध्यान उधर गया और उनके लिये दो तीन 'दिशम' देने की बात चीत करने लगा। लेकिन जब उसको मालूम हुआ कि ये चिड़ियाँ बिकने के लिए हैं तो दो तीन सोने की 'दीनार' देकर सौदा पटा लिया।

'पिंजड़ा उठाओ' सिपाही ने कहा—'और मेरे साथ चलो।'

घर पहुँचने पर दरवाजा खटखटाया और मंसूर मे पिंजड़ा लेकर अन्दर घुस गया। दाम के इन्तजार में वह बेचारा बाहर बहुत देर तक खड़ा रहा, आखिर उसने दरवाजा खटखटाया। इस पर एक नौकर बाहर निकला और पूँछा—'क्या काम है ?'

मंसूर ने जवाब दिया कि उसने जो दो कोयलें सिपाही को बेची हैं उनके दाम के इन्तजार में वह खड़ा है।

'अच्छा अब तुम चुपचाप भाग जाओ, वरना मार खाओगे।'

'तुम्हारे मालिक का क्या नाम है ?' मंसूर ने पूँछा।

'आबू शफी, 'नौकर ने जवाब दिया—'लेकिन वह इब्न-शैतान' (शैतान का लड़का) के नाम से ज्यादा मशहूर है।'

'खैर', मंसूर बोला—'चाहे वह इब्न शैतान का बाप ही क्यों न हो उसको दाम तो देने ही चाहिये, कहो कि अगर वह दाम नहीं देना चाहते तो मेरी कोयल वापस कर दें।'

'मैं जो कहता हूँ, उसे मानिये जनाब और अब बात आगे न बढ़ाइये', नौकर ने जवाब दिया—'तुम इब्न शैतान को नहीं जानते। उसे सब खूनी समझते हैं और कोई उसे नाराज [illegible] नहीं सकता, उसकी कड़ी मूँछों को ही देख यहाँ के सौदागर उसे शेर समझ कर डर जाते हैं।'

'फिर भी', मंसूर बोला—'या तो मेरी कोयलें वापस दी जायँ या उनका दाम दे दिया जाय। जाकर उनसे कहो तब तक मैं यहीं इन्तजार करता हूँ।'

युवक के इस पक्के इरादे को देख कर नौकर मालिक के कमरे की ओर गया उसके पीछे मंसूर भी हो लिया। उस लड़के की माँग सुन कर इब्न शैतान गुस्से से उबल पड़ा और चिल्लाया—'कहा है वह बदतमीज ? इधर बुलाओ ताकि उसे सजा दी जाय।'

'मैं यहीं हूँ, विश्वासी' मंसूर ने कहा और लपक कर उसके सामने आ खड़ा हुआ—'अभी एक घंटे पहिले जो आपने दो कोयलें मुझसे खरीदीं थीं, उनके बदले मैं दो सोने की दीनार लेने आया हूँ।'

थोड़ी देर तक इस युवक की साफ साफ बात सुन कर इब्न शैतान भौचक्का सा रह गया और बोला—'मैं कोई तुम्हारा कर्जदार नहीं हूँ, यहाँ से सीधी तरह से भाग जाओ, वरन् बड़ी मार खाओगे।' मंसूर ने सोचा कि मामला टेढ़ा है लिहाजा वह बदला लेने की सोच कर वहाँ से चल दिया।

(२)

उस सिपाही के घर के पास एक कुआँ था, जहाँ पड़ोस की नवयुवतियाँ पानी भरने जाया करतीं थीं। लड़की के भेष में एक दिन मंसूर भी एक अच्छा घड़ा लेकर कुएँ पर गया और जैसे ही इब्न शैतान उधर से निकला, जान बूझ कर अपना घड़ा पानी में डाल बुरी तरह रोने लगा। उसके रोने पर इब्न शैतान उधर आया और इस उम्मीद में कि इस नवयुवती से कुछ काम बनेगा, उसे मदद दे[illegible]

'आह !' मंसूर ने औरतों की सी आ[illegible] कहा—'पुराने काम का बर्तन खोकर अ[illegible] जाऊँगी !'

इधर वह सहानुभूति की बातें करने लगा और कुएँ के करीब जैसे ही वह झाँका कि मंसूर ने उसे ढकेल दिया और उसे दाम भी न देने की याद दिला दी। इस तरह उसे कुएँ में ढकेल कर फौरन ही मंसूर अपनी माँ के साथ शहर के किसी और कोने में जाकर रहने लगा।

उम्मीदों के खिलाफ इब्न शैतान मरा तो नहीं परन्तु घायल बुरी तरह से हो गया। पानी कम होने की वजह से डूब भी न सका। बड़ी देर तक चिल्ल पुकार करने पर उसने कुछ औरतों की आवाज ऊपर सुनी और उसके दिल में धड़कन होने लगी कि शायद अब वह बच जाय। इधर नीचे से चिल्लाहट सुन औरतें डर कर पीछे हट गई और सोचने लगीं कि गलती से वह जहन्नुम के किनारे आ गई हैं और थोड़ी ही देर में शैतानों का सरदार उनके सामने होगा। उनमें से एक हिम्मत बाँध कुएँ के पास पहुँची और अल्लाह के नाम पर पूछा कि वह शैतान है या शैतान का लड़का। अबू शफी ने सोचा कि वह शैतान के लड़के के नाम से तो मशहूर ही है, फौरन ही बोला—'मेरा नाम इब्न शैतान है' और कुएँ से बाहर निकाल लेने के लिये प्रार्थना करने लगा।

'खुदा बचाए', वह औरत बोली—'इस दुनिया में काफी शैतान मौजूद हैं। अगर खुदा को यही मंजूर है कि तू इस तरह नीचे पड़ा रहे तो इन्साफ के दिन तक तुझे यहीं पड़ा रहना चाहिये। तेरे कुएँ में पड़े रहने से पानी भी गन्दा हो गया होगा इसलिये मैं सब पड़ोसियों को भी खबर किये देती हूँ कि इस कुएँ से कोई पानी न खींचे। उस सिपाही ने यह बताने की बहुत कोशिश की कि वह एक शरीफ घराने का आदमी है और खलीफा के सिपाहियों में से एक है। इसके जवाब में उसे सिर्फ एक पत्थर मिला जिससे वह बाल-बाल बच गया।

इस तरह इब्न शैतान के कुएँ में गिर जाने की खबर शहर में बिजली की तरह दौड़ गई। आखिर कुछ अरब इसका भेद लेने पहुँचे और बहुत रोने, गिड़गिड़ाने पर उसको [...]या, मगर उसकी हालत अब बहुत खराब हो [...]ँव सा हो रहा था।

[...]ने सोच ही रक्खा था कि वह अब तक [...] जब उसे मालूम हुआ कि वह बचा लिया गया, तो उसे बड़ा गुस्सा आया और उसे मार डालने की कोई न कोई तरकीब सोचने लगा, क्योंकि अगर वह बच जाता है तो मंसूर को भी जान का खतरा रहेगा।

(३)

सिपाही को देखने के लिये कई डाक्टर आये, मगर उसकी हालत और भी खराब होती गई। न उसे दिन चैन, न रात नींद, फिर भी उसे यह ख्याल न आया कि यह खुदा की दी हुई सजा है। वह अच्छा होने पर मंसूर को मार डालने की कोई न कोई तरकीब सोचने लगा।

ऐसे ही सोच विचारों में एक दिन वह पड़ा हुआ था कि एक नौकर ने आकर उसे खबर दी कि सफेद दाढ़ी वाला कुबड़ा हकीम उधर से जा रहा है और उसने कई मरीजों को ठीक भी कर दिया है। इब्न शैतान ने सोचा कि जरूर ही इस हकीम में कोई न कोई सिफत होगी और उसे फौरन बुलवा लिया।

हकीम साहब अन्दर आए और हँसते हुये पूछा कि क्या बीमारी है। इब्न शैतान ने दर्द भरी कहानी हकीम को सुनाई और गिड़गिड़ाने लगा। हकीम साहब हँस कर बोले कि अगर वह उन पर पूरा यकीन कर सके तो दवा के जरिये बड़ी जल्दी उसे आराम हो सकता है। इब्न शैतान ने बड़ी खुशी से हकीम साहब की यह बात मान ली और खुशी के मारे बिना दवा के ही उसे आराम मालूम होने लगा।

इस तरह मरीज के दिमाग को पूरी तरह से अपने काबू में कर हकीम साहब ने उसके सारे नौकरों को तरह तरह की दवाइयाँ लेने भेज दिया।

जब सब चले गये तो वह मरीज के बिस्तरे के करीब आ कर गुस्से में बोला।

'इब्न शैतान! मेरे पास दो दवाइयाँ हैं, पर बड़ी रूखी; परन्तु उनका असर बड़ा तेज और जल्दी होता है। तू कहता है कि एस्मी का लड़का मंसूर तेरा दुश्मन है और अब भी, जब तेरा एक पैर कब्र में लटक रहा है, तू उसके लिये गुस्से से उबलता है। जो माफी नहीं माँगते उन्हें अल्लाह भी नहीं छोड़ता। इसलिये तू यह कह दे कि तुझे मंसूर की जान की ख्वाहिश नहीं है। इसके जवाब में मैं

तुझे अच्छा करने का वायदा करता हूँ। पहिलो दवा 'पश्चाताप' है—पियेगा ?'

'अल्लाह के नाम पर मैं उसे कभी नहीं छोड़ूँगा, इसी वजह से तो मैं अच्छा होना चाहता हूँ।'

'गुलाम ! कुत्ते ! बदमाश' मंसूर अपने कपड़ों में से निकल पड़ा और उसका गला पकड़ कर कहने लगा—'अगर तू रहम के काबिल होता तो शायद मैं तुझे छोड़ देता। मगर तेरा बदला सिर्फ मुझ पर ही न रह कर मेरी माँ पर भी होगा, जिसने तेरा जरा भी नुकसान नहीं किया है। इसलिये ले, मैं तुझे दूसरी दवा देता हूँ।'

इतना कहते ही उसकी छाती में वह तेज खञ्जर घुस गया और मंसूर ने भाग कर अपनी राह ली।

मातृ वन्दना

लेखक, श्री वीरेश्वरसिंह एम० ए०, एल-एल० बी०

जानत हौं नहिं धर्म-अधर्म,
सुकर्म-कुकर्म को भेद न जानौं।
माला कहा, मृग छाला कहा,
टिकुली अरु टीका न मैं पहिचानौं।
साँस न खींचौं, न छाड़ौं उसास,
न लोक गनौ, परलोक न मानौं।
नास्तिक हू झुकि पैर छुवैं तेहि,
मातहिं ज्ञानौं औ' ताहि बखानौं ॥१॥

ईश, गिरीश, सुरेश, महेश, हैं,
नाम सबै गुरिया के गिनाए।
रोटिन में हमरी कतहूँ कोउ,
नोन लगावन को नहिं आए।
दूध पियो तौ तिहारो पियो,
औ' जिए जग में तौ तिहारे जिआए।
माता तिहारी ही छाँह रही,
जब-ही-जब संकट के धन छाए ॥२॥

धारि गोवर्धन कोउ गए,
कोऊ मारि गए दसकंधर भारी।
कापि गए तिरलोक कोऊ,
हिरनाकश की कोउ देह बिदारी।
गङ्ग को धारि सुनंग भए कोऊ,
क्षीर-महोदधि के हैं विहारी।
काम परे पै मैं साँची कहौं कोऊ,
आय कै बाती दिया की न टारी ॥३॥

राखत है मनको हठ जो,
दिन रात हमारी ही ध्यान धरै।
बिन भोग लगाए खिलावत भोग,
बिना जप जोग के मान करै।
आठौं घरी जो खड़ी ढिग है,
दुख में जगि रात विहान करै।
ऐसी दयामय को तजि कै,
केहि पाहन को कवि गान करै ॥४॥

हैं पद जौ तौ वही पद-पङ्कज,
धाए सदा बिन टेर लगाए।
बाँह जो है तौ सुबाँह वही,
गहि बाँह सदा जिन राह चलाए।
नैन वही जो भरे सुसनेह,
हियो जिन धूरि भरे अपनाए।
ईश वही, जौ हमारो रहै,
जौ हमारी सुनै, जौ हमारो कहाए ॥५॥

माता हो ईश हमारी तुम्हीं,
तुम्हारो मुख जोहत ही दिन जैहैं।
जैहैं जौ प्राण तौ जाँय, न
पूत तिहारे कहूँ अरु ध्यान [illegible]
गैहें तौ गान तिहारो, पताका,
तिहारी चहूँ दिशि [illegible]
रैहें तिहारे त्रिकाल में, का[illegible] बार
के भाल पै [illegible] ॥

? प्रश्न-पिटारी ?

मायके की तारीफ

प्रश्न—मेरी एक भावज हैं। वे अपने मायके की तारीफ करके अपनी शान जमाने के अतिरिक्त हमारी कुछ भी परवाह नहीं करती। यों तो हमारा घर उनके मायके से कहीं बढ़ कर धनी है तथा नाम और प्रतिष्ठा भी बहुत है। तो भी वह सदा ही यह दिखलाती रहती हैं कि उन्होंने मेरे यहाँ आकर हमारे ऊपर बड़ा एहसान किया है। यदि हमारे यहाँ का कोई भी व्यक्ति या स्वयं उनके पति देव ही अगर कोई शेर भी मार लावें तो वह मुँह ही बिचकावेंगी परन्तु यदि उनके मायके का कोई व्यक्ति यदि एक मच्छड़ भी मार ले तो वह उसकी तारीफों के पुल बाँधते नहीं थकतीं। उनके मायके के किसी सम्बन्धी ने कोई नौकरी कर ली तो उसके बाद से नौकरी की तारीफ की सरिता बह निकली। उनको इस गरीब के झोपड़े में कृपा किये हुये प्रायः तेरह चौदह साल हो गये परन्तु हैं वैसी की वैसी। अब मेरा दो प्रश्न है पहला तो यह कि उनकी इस बीमारी का कोई इलाज भी है? और दूसरा यह कि क्या सब नारी समाज ही ऐसा व्यर्थ की शान हाँकने वाला है?

उत्तर—अपना मायका सभी स्त्री को प्यारा होता है। ससुराल के मुकाबले में मायके की और मायके के लोगों की प्रशंसा करना स्त्री के लिए स्वाभाविक ही है। इसका एक ही उपाय है कि आप अपनी भावज साहबा के इन कोमल भावों का आदर करें। उनकी प्रत्येक बात के उत्तर में कहें—'हाँ, आप ठीक कहती हैं।' तब वे बदले में आपके पक्ष की भी कद्र करेंगी।

मन सुखी कैसे रहे ?

...मैं क्या करूँ कि मेरा मन सदैव सुखी रहे।

उत्तर—एक बार यही प्रश्न एक अमरीकन महिला ने वहाँ के एक प्रसिद्ध मनोवैज्ञानिक डाक्टर आर्थर फ्रैंक पेन से किया था। फ्रैंक ने मन को सुखी रखने के १२ नियम बताये थे। वे ये हैं:—

(१) जो भी काम तुम्हारे सामने आवे, उससे भागो मत। उसमें प्रेम से लगो।

(२) अपने शरीर को अच्छे भोजन, समुचित व्यायाम और अच्छे विचारों के द्वारा स्वस्थ रक्खो।

(३) भय, घृणा, ईर्षा, द्वेष को विष समझो। इन्हें अपने दिमाग में मत आने दो।

(४) अपने जीवन का ध्येय निश्चित करो और सोचो कि उस ध्येय का कहाँ तक मूल्य चुकाने को तैयार हो।

(५) निरन्तर हँसते रहने का, दुःख की घड़ियों में भी मुस्काने का अभ्यास करो।

(६) जब तुम्हें अपना कोई दुःख असह्य जान पड़े तब किसी विश्वासी प्रियजन से उसकी चर्चा करो। उसकी सहानुभूति से तुम्हारा दिल मजबूत होगा।

(७) निराशावादियों और उदास रहने वाले व्यक्तियों से दूर रहो। अपना रोग वे तुम्हें भी दे सकते हैं।

(८) हर नये मामले में दिलचस्पी लो। याद रक्खो दुनिया दिन पर दिन नई हो रही है।

(९) प्रति वर्ष कुछ नये मित्र पैदा करो। यह कोशिश करो कि दूसरे लोग तुम्हारा आदर करें।

(१०) याद रक्खो कि सुख अपने हाथ में ही है।

(११) जो बात बीत चुकी, उसे भूल जाओ। जो सामने है, उस पर ध्यान दो।

(१२) अपने सुख को अपने ही तक मत रक्खो। यानी दूसरों को भी सुखी बनाने की कोशिश करो। जितना ही तुम्हारी ओर से दूसरों को सुखी रखने का प्रयत्न होगा, उतना ही तुम्हें सुख प्राप्त होगा।

———

पति कैसा होना चाहिए ?

लेखिका, श्रीमती कमला शिवपुरी बी० ए० बी० टी०

कुछ लोगों को यह ऊपर की पंक्ति पढ़ कर आश्चर्य अथवा क्रोध होगा कि पति कैसा ? जैसा भी मिल जाय वही गनीमत । स्त्री चुनने व चाहने वाली कौन ? परम्परा से यही चला आया है । पत्नी को चाहिये, वह अपने को मिटा दे जो पति चाहे सो करे । अपने देवता से क्या बहस ? जो वह कहे सो करो चुपचाप पड़ी रहो । इसी में खैर है वरना साहिबा किसी दिन बोरी बिस्तरा गोल, आँखों में से झरना बहेगा । वही करो जो पति चाहे ?

पर भाई साहब जमाना पलट रहा है, आपको भी कुछ मुड़ने तुड़ने झुकने का प्रयत्न करना ही पड़ेगा वरना जूती पेजार तू तू मैं मैं तो होगी ही । क्लेश आप भी उठावेंगे । आप भी मुँह लटकाए घर में फिरेंगे, या यों कहिये घर से भागते फिरेंगे, उसको तो निकालना अब उतना सहज नहीं जितना पहले था । तनखाह में से बटवारा, बच्चे हैं तो उनकी मुसीबत गर्ज आप कम दुःख न पावेंगे । तो जरा ध्यान से पढ़िये कि स्त्री क्या चाहती है ।

१—पत्नी पर विश्वास करिये । यदि वह इस योग्य नहीं है तब भी करिये, न करने से बात बढ़ेगी, घटेगी नहीं । विश्वास करने से वह इस योग्य बन भी जावेगी, अविश्वास करने से वह दिन दिन छिपा कर काम करना सीखेगी, आप कुढ़ेंगे चुपके से झाकेंगे कि अब झूट पकड़ूँ तब झूट पकड़ूँ फल अच्छा किसी के लिये भी न होगा ।

२ वह कैसी भी भद्दी क्यों न हो उसके भद्देपन की किसी के सामने तो क्या अकेले में भी टीका टिप्पणी न करिये यह वह पसंद नहीं करेगी, यदि वह किसी भी बात में कम भद्दी है उसी की प्रशंसा करिये । पर भूल कर भी उसके अवगुण को न दिखाइये । अगर वह बहुत मोटी है तो यह भी मत कहिये कि तुम बड़ी सुबुक हो इससे वह जलेगी, मुटापे की चर्चा न करके उसकी नुकीली नाक, उसकी चितवन की प्रशंसा करिये वह प्रसन्न होगी, भाई साहब आप क्या अपने काले रङ्ग की बार बार चर्चा से प्रसन्न होते हैं ? वैसे ही उसका भी मन रखना सीखिये ।

३—पत्नी यह कभी नहीं पसन्द करेगी कि आप बार बार कहिये । 'अरे तुम दिन भर बैठी क्या करती रहीं ।' या भाई तुमसे कुछ नहीं होता यह भी मैं करूँ वह भी मैं करूँ तुम बैठी रहती हो । पत्नी जो कुछ काम करके रखे उसकी प्रशंसा करिये और कहिये भाई यह तुमने बड़ा अच्छा करा, कल हो सके तो यह और कर देना, उसकी त्रुटियों की ओर ध्यान मत करिये । कितनी भी निकम्मी हो वह सुनना यही पसन्द करेगी — 'तुम भाई बड़े काम की हो, तुम न होती तो यह काम मेरा कौन करता ।' आप कहेंगे कि 'काम तो करें खुद प्रशंसा करें पत्नी की ।' सो भाई कुछ तो काम निकम्मी भी करके रखती ही होगी, क्लेश से बचियेगा । उसी काम की प्रशंसा करिये वह आपसे प्रसन्न होगी काम भी अधिक करने का प्रयत्न करेगी जो काम करवाना चाहें कहिये यह तो तुम कर लोगी, तुम इससे कठिन काम भी कर चुकी हो, यह तुम्हारे बाँए हाथ का है । उसके करने के बस का भी न होगा तब भी वह आपकी नजरों में गिरना नहीं चाहेगी और अच्छे से अच्छा करके दिखाएगी । याद रखिये निकम्मी से निकम्मी भी प्रशंसा से कुछ कर निकलेगी ।

४—उसके घरू मामलों में दखल न दीजिये घर में उसे राज्य करने दीजिये आप बाहर दफ्तर में जहाँ जी चाहे राज्य करें, पर घर में उसी का शासन रहने दीजिये, बड़ा समझ कर फायदे में रहियेगा, वह प्रसन्न रहेगी कि मैं भी कुछ चीज हूँ घर में प्रसन्नता रहेगी तो आप भी बाँटेंगे ही !

५—उसकी पकाई चीज की प्रशंसा करिये । अगर बिगड़ भी गई तो यह मत कहिये । 'सत्यानास कर दिया खाना भी नहीं बनाना आता ।' कहिये 'तुम तो बड़ा अच्छा बनाती थीं, आज क्या बात है जो बिगड़ गया ।' वह प्रसन्न होगी । आगे प्रयत्न करेगी कभी खराब खाना न हो ।

६—खर्च अगर कुल उसके हाथ में [illegible] है ही मगर आप रखिये तो उसको घर [illegible] दीजिये तंग मत करिये, जी चाहे जैसे [illegible] बार जवाब सवाल न करिये, वह प्रसन्न [illegible]

७—अगर कई वर्ष विवाह को हो गये हों तो अपनी बोलचाल में मुर्दनी मत लाइये। कभी कभी प्रेमालाप के लिये स्थान रखिये। यह मत सोचिये कि अब बड़े हुये अब क्या आवश्यकता है। या वह मुझे समझती हैं अब कहने सुनने से क्या। उसके काम इसकी बात जोहेंगे कि कभी तो आप कोई प्रेम की बात कहिये, जिससे उनमें ज़िन्दा रहने की लालच आ जाय।

८—अगर वह कहीं जावे तो पीछे से नौकर मत दौड़ाइये। दौड़ाइये भी तो हुक्म मत दीजिये, हुक्म सुनना कोई पत्नी आज कल पसन्द नहीं करती।

९—उसके साथ घूमने जाइये तो यह मत कहिये, तुम औरतों के साथ क्या जायँ? मजा नहीं आता, एक वह स्त्री जाति की तुच्छता से क्रुद्ध होगी। दूसरे वह आपकी पत्नी है न कि कोई भी एक स्त्री। ऐसे बाण मत फेंकिये।

१०—कोई भी पत्नी अपने पति के मुख से किसी स्त्री की प्रशंसा अधिक बार नहीं सुन सकती। यदि आप बार-म्बार उसकी प्रशंसा न कर किसी अन्य की करते जावेंगे तो वह जल जावेगी और फिर आपका भी जी जलावेगी।

११—पत्नी का पक्ष लीजिये उसका हृदय खुशी से भर जायगा वह उसका बदला अवश्य चुकावेगी वह आप ही से तो सब आशा रखती है और उसका कौन है?

१२—किसी के सामने कभी उसको मत डाटिये। वह सब की नजरों में गिर जायगी वह समझेगी आपको उसका कारण और बहुत शीघ्र वह यह भूलेगी भी नहीं। हो सके तो चुपके से समझा दें। वह यह सोच कर कितनी प्रसन्न होगी कि मेरी सबके आगे आँखें ऊँची है कभी मेरे पति ने मुझे किसी के सामने कुछ नहीं कहा।

१३—घर में मुँह फुलाना। बाहर दोस्तों के पास से आपके हँसी के फव्वारे आवें यह पत्नी को राख कर देगा। घर में पत्नी के लिये समय रखिये, उसके दुख दर्द को बाँटिये वह प्रसन्न होगी। 'कुड़कुड़ाता हुआ पति रुचि कर नहीं हँसता हुआ आवे तो गृहिणी भी प्रसन्न हो जाती है।

तर [illegible] पत्नी की त्रुटियों की ओर कानी आँख भी न क[illegible]गुण की चर्चा करिये, त्रुटियें इतनी बड़ी स्त्री की [illegible] हो [illegible]से डाँटने फटकारने से सुधर नहीं सकतीं। गुण[illegible] करिये, सम्भव यही है कि वह अधिक गुणवती बनने का प्रयत्न करें। अगर कोई उसमें बड़ा ऐब भी हो तो कहिये, तुममें इतने गुण हैं, अगर यह भी होता तो तुम और भी प्यारी हो जातीं। वह उसी दिन से यह प्रयत्न करेगी कि मैं हद से भी आगे निकल जाऊँ, आपको प्रसन्न करने के लिये, अपने को और भी उच्च करने के लिये सम्भव है यह उस अवगुण को भी धीरे धीरे कम कर दे।

१५—यह मत करिये कि विवाहोपरान्त तो प्रेम में अंधे हो। धीरे धीरे सब भूल भाल पत्नी के मोह जाल को भूल घर के धन्धों में उसे फँसा आप उसे प्रेम की चर्चा भी न करें, कभी बात भी करने की अधिक आवश्यकता न समझें। वह बीमार हो तब भी घर धन्धों में गड़ी ही रहे आप खास इलाज की भी फिक्र न करें। यह कह कर कि 'यह खास बीमारी नहीं बहुत जल्द काम के योग्य हो जाओगी।' टाल दें। क्या कहा! 'काम के योग्य।' 'क्या मैं घर की टहलनी हूँ?' स्मरण रहे वह पुराने प्रेमालाप उसे अब भी याद हैं वह समय भी, जब उसे जरा सा सिर दर्द होता था आप घबरा जाते थे उपचार करते थे। अब ऐसा अन्धेर कि बुखार भी मामूली चीज हो गया है!

प्रेम को धीरे धीरे बढ़ाना चाहिये यह भी एक पौदा है जिसे प्रेम जल से सींचा जाय। न कि जहर का पौदा जिसे नोच कर जड़ समेत (हृदय समेत) उखाड़ फेंका जाय।

. प्रेम धीरे धीरे कैसे बढ़ेगा? त्रुटियों की ओर (सब प्रकार की) आँख बन्द कर लीजिये। गुण की प्रशंसा से गुण बढ़ कर अवगुण आप कम हो जावेंगे।

पत्नी प्रसन्न रहेगी तो आप भी प्रसन्न रहेंगे बुढ़ापे तक यदि भगवान ने चाहा तो आपका साथ देगी कोई अन्य ऐसी वस्तु नहीं जो आपसे उसे पृथक कर सके। यदि आप ने प्रेम जल से न सींच कर पौदे का जल बदल दिया है और पौदा जड़ सहित मरने लगा तो? तो आपकी पत्नी से बुरा दुश्मन आपका दूसरा कोई नहीं। प्रेम करते करते भी वह आपसे घृणा करती है। निकट होते हुए भी वह आप से दूर है। सेवा करते हुये भी वह आपकी चाह नहीं रखती हृदय में जरा सी प्रेम की बुझी हुई चिङ्गारी होते हुये भी वह आपको जलाती है कैसे? कटु भाषण से? क्यों? यह सब अपने हृदय से अब पूछिये, आपने उसकी कितनी इच्छायें इनमें से पूरी करी है?

राम राज्य

लेखक, पण्डित मोहनलाल नेहरू

यह तो मानना ही पड़ेगा कि पराधीन देशों में सिनेमा व्यवसाय वह काम नहीं कर सकता जो स्वाधीन देशों में कर सकता है। फिर भी कम से कम वह ऐसे फिल्मों को बनाना बन्द कर सकता है जिसमें हमारे पूज्य पुरुषों की बुरी से बुरी हरकतें दिखाई जाती हैं। कौन नहीं जानता कि प्रत्येक व्यक्ति में जहाँ कुछ अच्छाइयाँ हैं वहाँ बुराइयाँ भी है और अपने लम्बे जीवन में वह अच्छी और बुरी सब ही बातें करता है। परन्तु जहाँ अच्छाइयों का पल्ला भारी होता है वहाँ बुराईयों का बखान नहीं होता, बुराइयों का भूलना और दूसरों को भुला देना ही बुद्धिमानी समझी गई है।

राम राज्य की दोहाई आज तक क्यों दी जाती है? समझा जाता है कि उनके राज्य काल में एक भी व्यक्ति न भूखा था न नङ्गा, न एक दूसरे से बैर करता था। तुलसीदास जी ने बड़ी ही खूबी से राम राज्य के गुण हमें बताये हैं।

> दैहिक दैविक भौतिक तापा,
> रामराज नहीं काहहु व्यापा।
> सब नर करहिं परस्पर प्रीती,
> चलहिं स्वधर्म निरत स्रुति रीती।
> नहिं दरिद्र कोऊ दुखी न दीना,
> नहिं कोऊ अबुध न लच्छन हीना।
> सब गुनज्ञ पण्डित सब ज्ञानी,
> सब कृतज्ञ नहिं कपट सयानी।
> सब उदार सब पर उपकारी,
> एक नारि व्रत सब रत झारी।

यह हैं वे गुण जो राम राज्य में समझे जाते हैं या यों कहो कि जब प्रजा की यह दशा हो तब तो वही राम राज्य है। प्रजा में प्रत्येक व्यक्ति के पास काम करने को पेट भर खाने को और बदन ढकने को कपड़ा काफी हो तो वे एक दूसरे से बैर करें ही क्यों खासकर जब उनको शिक्षा ऐसी मिलती हो जिससे अच्छे बुरे का ज्ञान भी काफी हो।

जहाँ रामचन्द्र जी में यह गुण भरे थे वहाँ कमजोरी भी थी, 'नर चरित्र' करने में नर की सी कमजोरी न कैसे दिखाते। बाली को छिप कर मारना तो राजनैतिक चालों में गिना जा सकता है, उन्हें सुग्रीव से सहायता की जरूरत थी। बाली से बातचीत तक न हुई थी क्या मालूम था वह साथ देगा या नहीं। सुग्रीव हाथ में था उसीसे मित्रता करनी ठीक थी। मगर सीता जी का त्याग शायद 'नर अवतार' में सब में बड़ी कमजोरी थी और उनकी यह हरकत आने वाली नसलों के वास्ते बहुत ही बुरी मिसाल थी, न मालूम इसने कितनी निर अपराध स्त्रियों पर आगे चल कर मुसीबतें डाली होंगी।

और आज हम यह देख रहे हैं कि यही राम जी की रामराज्य की नहीं घृणित हरकतें रामराज के नाम से पुकारी जा रही हैं और हजारों स्त्री पुरुष इसे देखने जा रहे हैं। अपनी अपनी भावना के अनुसार वे अच्छाई या बुराई करते ही होंगे, मगर मुझे तो ऐसा मालूम होता है कि विदेशी देखने वाले हमारा पूरा मजाक उड़ाते होंगे और हमारे खिलाफ एक और हथियार उनसे हाथ में आ गया होगा। क्यों हमारे पूज्य पुरुष और भगवान का औतार रामचन्द्रजी तक इतने कान के कच्चे कि अपनी आँखों तक का एतबार नहीं। उन्होंने सीता की पवित्रता का सुबूत ले चुकने के बाद भी वह हरकत की जो शायद मामूली अपढ़ जाहिल भी न करता। एक धोबी का कहना वसिष्ठ जी के कहने से भी ज्यादा जाना गया। कैसे दुख की बात है। अगर विदेशी कहेंगे कि जब हम ऐसी हरकतों तक को राम राज्य कहते हैं तो हम स्वराज्य के काबिल नहीं। उन्हें तो "कोई लकड़ी कुत्तों को पीटने के वास्ते" काफी हैं।

मगर शायद फिल्म बनाने वाले असली राम राज्य का चित्र बनाते तो सेंसर होने का डर होता। उन्हें तो जिन्दा रहना और अपने पात्रों को जिन्दा रखना था [illegible] नाजुक है। हमारे सरकारी कर्मचारी बात बापराजित से [illegible] जाते हैं और यहाँ तक कि सैकड़ों बरस पहले मुझसे [illegible] पुस्तकों तक में काट छाँट की नौबत आने [illegible]।

राज धर्म का बखान ही जहाँ मना है तहाँ असली राम राज्य का चित्र किसे बनाने की हिम्मत हो सकती है।

रसोई की एक दुर्घटना

रसोई घर की एक साधारण दुर्घटना है आग से जलना। कभी खौलता हुआ पानी छलक जाता है, कभी कड़ाही से घी छलक जाता है, जिसके छींटे अङ्ग पर पड़ते हैं तो वहाँ की त्वचा जल जाती है। कभी कभी साड़ी के छोर में चूल्हे की आग छू जाने से सारे शरीर तक के जल जाने का डर रहता है। माना कि ऐसी दुर्घटनाएँ कम होती हैं और चतुर गृहिणियाँ पूरी सावधानी रखती हैं। फिर भी यह जानने की जरूरत है कि आग से त्वचा का कोई हिस्सा जल उठे तो क्या करना चाहिये ?

सुनिये, त्वचा के जलने के तीन रूप होते हैं। एक वह जिसमें त्वचा सिर्फ लाल होकर रह जाती है और जलन होती है। यह मामूली जलना है। इसमें त्वचा पर 'जान-मन' का बेबी पाउडर या कोई कीटाणु नाशक पाउडर लगा देना चाहिये। इतने ही से यह ठीक हो जायगा। दूसरा वह है जिसमें छाले पड़ जाते हैं। इसमें चूने का पानी और नारियल का तैल समभाग एक में फेंट कर उसे बराबर तर रखना चाहिये। इससे जल्द आराम हो जायगा। तीसरा वह है जिसमें त्वचा बिलकुल ही जल जाती है। इस दशा में डाक्टर से सलाह लेना चाहिये और बड़ी सावधानी से ड्रेसिङ्ग करानी चाहिये। ड्रेसिङ्ग बदलते समय उसे नीम की पत्ती से पकाये हुये पानी से भिगो कर ढीला कर लेना चाहिये ताकि उसके साथ मांस न नुच आवे। डाक्टर न मिले तो चूने के पानी और तैल के घोल से जले अङ्ग को तर क[illegible]पर से नीम की छाल की बुकनी छिड़क देनी चाहिये [illegible]सा बराबर करते रहना चाहिये जब तक कि घाव अच्छा [illegible] हो जाय।

—लक्ष्मी भटनागर

आलू के वरक

बड़े आलू उबाल लो। फिर छील कर सबूत आलू लेकर तेज चाकू से बहुत बारीक बारीक गोल गोल वरक (कतरे) उतार लो। फिर धूप में खूब सुखा कर रख लो। जब चाहो तब भरे घी में पूड़ी की तरह सेंक लो। लेकिन लाल न होने पावें। ऊपर से काली मिर्च और नमक पीस कर डाल दो।

इस बात का ध्यान रहे कि आलू के जितने बारीक से बारीक वरक कटेंगे उतने ही तलने पर खस्ता होंगे।

—प्रतिमा सक्सेना, बरेली

याद रखने की बातें

लेखक बुद्धिसागर वर्मा विशारद, बी० ए० एल० टी०

१—यदि अदहन में थोड़ा सा नींबू का अर्क मिला दिया जाय, तो भात में एक चावल दूसरे से अलग रहेगा। भात बहुत सफेद होगा।

२—नमकीन पानी में तोड़े हुये फूल रक्खे जायँ, तो ताजे बने रहते हैं।

३—नमकीन पानी से सिर धोने से बाल नहीं गिरते।

४—कत्था और जीरा पीस कर मुँह में रक्खें। लुआब थूकते जायँ। मुँह के छाले अच्छे हो जाते हैं।

५—पित्तपापड़ा के पत्तों का रस लेप करने से हाथ पाँव के तलुओं की जलन दूर होती है।

६—जिस पानी से चाँदी की चीजें धोई जायँ उसमें थोड़ा सा दूध मिला लिया जाय, तो चाँदी चमकदार हो जायगी।

७—नई लम्प की बत्ती २-३ घण्टे सिरके में तर करके भली भाँति सुखा ली जाय, तो लम्प धुवाँ न देगी।

८—यदि आप साफ रङ्गत उत्तम हाजिमा और अच्छी निद्रा चाहते हों तो नित्य रात को एक गिलास गरम पानी पी लिया करें।

९—यदि पैर थके हों, तो थोड़ा नमक मिला कर गरम पानी से धो डालो।

१०—थकी हुई दशा में भोजन मत करो।

——

चौथा ब्याह

लेखक, श्रीनाथसिंह

चाँदरानी

[१]

सेठ देवीचरण, स्त्री का एक स्वभाव जानते थे। वह था—पति को हर हालत में प्यार करना, पति की सेवा करना और अपनी इच्छा को पति की इच्छा बना देना। उन्होंने तीन विवाह किये थे और तीनों में उन्हें यही अनुभव हुआ था; परन्तु जब उन्होंने चौथा विवाह किया और चाँदरानी ने उनके घर में प्रवेश किया, तब उन्हें मालूम हुआ कि स्त्री के स्वभाव का यहीं अन्त नहीं है। वह अगम्य समुद्र है और उसकी गहराई तक पहुँचना, हर एक मनुष्य के लिये सम्भव नहीं है।

चाँदरानी का जैसा नाम था, वैसी ही वह थी भी। बड़ी ही प्रसन्न-बदन बड़ी ही स्वच्छन्द और बड़ी ही चञ्चल। उसके हास्य में चन्द्रमा का प्रकाश, उसकी बोली में चन्द्रमा का माधुर्य और उसकी चितवन में चन्द्रमा की शीतलता घनीभूत हो रही थी। उसकी ओर जो देखता था, देखता ही रह जाता। हर एक से वह ऐसे मिलती थी, जैसे उसकी वर्षों की परिचित हो। उसके इन्हीं गुणों के कारण सेठ देवीचरण उसकी ओर आकर्षित हुये थे और आकर्षित हो जाने पर उसे अपने घर में ला बैठालना उनके बाएँ हाथ का खेल था। वे करोड़-पति थे। वे बहुत कुछ कर सकते थे।

चाँदरानी ने सेठजी की पहले की तीनों स्त्रियों से इस प्रकार बातें करनी शुरू कीं, मानो वह उन्हें पहले से जानती हो। बड़ी सेठानी से उसने पूछा—बड़ी दीदी, तुम्हारे रहते, सेठ जी ने दूसरा ब्याह क्यों किया?

उत्तर मिला—मेरे कोई बच्चा नहीं हुआ।

'गलत! पुरुष सन्तान के लिये ब्याह नहीं करता।'

बड़ी सेठानी ने इसी बात को बहुत बार कहना चाहा था; पर वह कह न सकी थी। उसे अनुभव हुआ, कि चाँदरानी की बातों में मिठास ही नहीं दृढ़ता भी है। उसने कुछ उत्तर न दिया। वह चाँदरानी की ओर उदास-भाव से देखने लगी।

चाँदरानी ने कहा—बड़ी दीदी, तुम तो बड़ी सुन्दर हो, बड़ी अच्छी हो। तुमने सेठ को दूसरा ब्याह करने से रोका नहीं?

बड़ी सेठानी का हृदय उमड़ आया। आज प्रथम बार उसके कण्ठ के बाहर निकला—किसके बल पर रोकती, गोद में कोई बच्चा तो था नहीं!

चाँदरानी ने मझली सेठानी से कहा—मझली दीदी, तुम्हारा अपराध अक्षम्य है। बड़ी दीदी के रहते हुये तुमने इस ओर क्यों देखा?

'मैं गरीब की लड़की थी। मेरा कोई वश नहीं था।

'बिलकुल ठीक; पर यहाँ आ जाने पर, तुमने बड़ी दीदी से सहयोग करके सेठ जी को बार बार वही बुराई करने से बचाया क्यों नहीं?'

'मैं गरीब के घर में पैदा हुई थी। मुझमें जो कुछ रूप रस था, सब भगवान् से मिला था; पर अब देखती हूँ, कि भगवान् की दी हुई सुन्दरता में और मनुष्य की दी हुई सुन्दरता में बड़ा फरक है। गरीब की लड़की चटक-मटक, नाज-नखरे कैसे सीख सकती है? मेरे माँ बाप ने मुझे बनावटी हँसना रोना नहीं सिखाया था।'

चाँदरानी ने मुस्किराते हुये कहा ठीक कहती हो; पर छोटी दीदी, तुम इन दो असहाय अबलाओं के दाल-भात में मूसलचन्द क्यों बन गईं। तुम्हें तो भगवान् ने भी सब कुछ दिया था; और माँ बाप ने भी सब कुछ। इस प्रकार पढ़ लिख कर आधुनिक नारी बनने के बाद तुम इस चक्कर में क्यों पड़ गई।

छोटी सेठानी ने कुटिल-कृत्रिम और पराजित से हास्य के साथ कहा—प्रेम के कारण। सेठ जी ने मुझसे प्रेम की

भिक्षा माँगी। मैंने सोचा, इतने बड़े आदमी हैं। भिखारी की भाँति मेरे सामने हाथ फैला रहे हैं। मुझे दया आ गई—सचमुच दया आ गई। मैंने उपन्यास बहुत पढ़े थे। उपन्यासों से मैंने यह जाना था, कि प्रेम की पीड़ा कैसी होती है। स्त्री का प्रेम मनुष्य को न मिले, तो वह जिस प्रकार निकम्मा हो जाता है मेरी स्मृति में इसके सैकड़ों उदाहरण भरे थे। बस मैंने सोचा इतना बड़ा आदमी, जरा सी बात के लिये क्यों नष्ट हो। वर्ना माँ-बाप ने तो समझाया था।

चाँदरानी ने कहा—रावण का किस्सा पढ़ा है? उसने भी तो सीता से प्रेम की भिक्षा माँगी थी।

छोटी सेठानी—हाँ, वह माँग सकता था। प्रत्येक पुरुष प्रत्येक स्त्री से प्रेम की भिक्षा माँग सकता है। अब तक उपन्यास पढ़ते-पढ़ते मैं इसी नतीजे पर पहुँची हूँ। उपन्यासों का यही उद्देश्य है।

बड़ी सेठानी ने कहा—वाह री उपन्यास पढ़ने वाली! अगर कोई आदमी यहाँ आकर तुझसे कहे, कि सुन्दरी! सेठ जी को छोड़ कर मेरे साथ भाग चल! तो तू चली जायगी?

'अगर उसके प्रेम में जोर होगा, तो मैं क्या सती सावित्री को भी खिंचना पड़ेगा।'

मझली सेठानी ने कहा—तो सीता ने भूल की थी, क्यों?

छोटी सेठानी ने कहा—रामायण का वह छोटा स्थल पढ़ती हूँ, तो कभी-कभी सोचती हूँ, कि सीता को रावण पर कुछ कृपा अवश्य करनी चाहिये थी।

चाँदरानी ने मुस्करा कर कहा—ओह। कहाँ की बात कहाँ पहुँची। छोटी दीदी, वह सच्चा प्रेमी नहीं था। दुष्ट था। स्त्री को अपने सच्चे प्रेमी की पहचान होनी चाहिये।

छोटी सेठानी ने कुछ उदास होकर कहा—ठीक कहती हो बहन! बिना सोचे समझे किसी पुरुष की बातों में आ जाने वाली को बड़ा अपमान सहना पड़ता है। जान पड़ता है, सीता के समय में उपन्यास नहीं थे। तभी वे रावण के चंगुल से बच सकी हैं। मायावी पुरुषों ने अपनी उपन्यास-तरङ्गों द्वारा स्त्री हृदय के दृढ़ कङ्गारों को काट कर बालू कर दिया है अब एक साधारण लहर भी उन्हें उठा कर कहीं से कहीं फेंक सकती है।

चाँदरानी ने कहा—छोटी दीदी, अब क्या करोगी?

'अब मुझमें क्या रह गया? अब तो बालू हो चुकी हूँ। तुमने पदार्पण करके मेरे गर्व की चट्टान को चूर चूर कर दिया!'

'सेठ जी ने तुममें क्या ऐब देखा, जो चौथा ब्याह किया?'

'मेरी भी समझ में नहीं आता?'

इसके बाद बड़ी देर तक सब चुप रहीं। फिर छोटी सेठानी ने कहा—पर बहन, यह सब जानते हुये, तुम यहाँ क्यों आईं और अगर सेठ जी पाँचवीं को लाने लगेंगे, तो तुम्हीं क्या कर लोगी?

चाँदरानी बड़ी जोर से हँसी—ह! ह! ह! मैं जानती थी, कि तुम सब मुझसे यह सवाल करोगी। मैं सेठ जी को दुरुस्त करने आई हूँ; ताकि वे दुबारा यही कार्य करने का साहस न करें। मैं उनको, इतनी स्त्रियों के हृदय में छेद करने के लिये, समुचित दण्ड देने का विचार कर चुकी हूँ। बोलो! तुम सब मेरी सहायता करोगी।

सब आश्चर्य चकित सी उसकी ओर देखने लगीं। बड़ी सेठानी ने कहा—एँ! एँ!! यह क्या कहती हो! पति के लिये ऐसे शब्दों का प्रयोग?

चाँदरानी ने मुस्कराते हुये कहा—कोई परवाह नहीं, मैं सब अकेले कर लूँगी।

[२]

सेठ देवीचरण अपने कमरे में बैठे अखबार पढ़ रहे थे। एकाएक उनकी दृष्टि निम्नलिखित विवाह विज्ञापन पर पड़ी—

'मेरे पति देवता ने चार विवाह किये; परन्तु किसी स्त्री से उनके कोई सन्तान नहीं हुई। मैं उनकी चौथी स्त्री हूँ। मेरा खयाल है कि पति देवता ही में कोई ऐब होने के कारण हम लोगों के सन्तान नहीं हुई; इसलिये मैं अपना दूसरा ब्याह करना चाहती हूँ। एक पति के रहते दूसरा ब्याह करना, भद्दा जरूर मालूम होता है; पर अनुचित नहीं है। और फिर सन्तान के लिये सब कुछ किया जा सकता है। शर्त सिर्फ यह है कि नये पति महोदय को मेरे घर पर

रहना होगा। और वे मुझे मेरे पुराने पति से पृथक नहीं कर सकेंगे। साहसी सज्जनों को इधर ध्यान देना चाहिये।

'चाँदरानी'

विज्ञापन पढ़ते ही सेठ जी दहल गये। उनके हाथ से अखबार छूट गया। वे अपने जनाने महल की ओर चल पड़े। उनके चेहरे का असाधारण भाव देख कर नौकरों और नौकरानियों का उनसे कुछ पूछने का साहस न हुआ। सेठ जी ने भी किसी से कुछ न पूछा। वे सीधे चाँदरानी के कमरे में गये; पर वहाँ वह नहीं थी। तब वे अपनी अन्य स्त्रियों के कमरे की ओर गये; परन्तु किसी का पता न चला। उदास, उत्तेजित भाव से घूमते घामते वे जनाने बाग में जा पहुँचे। चारों स्त्रियाँ उनकी ओर पीठ किये एक बेंच पर बैठी, जाड़े की प्रभात काल की धूप का आनन्द ले रही थीं। चारों किसी बात पर मुस्करा रही थीं। मुस्कराहट की तरंगें, उनके होठों से उठ कर गालों पर होती हुई, अगल-बगल की हवा को स्पर्श कर रही थीं। चारों बाईं ओर से क्रम-बद्ध बैठी थीं।

एकाएक सेठ जी के कानों में बड़ी सेठानी के यह शब्द पड़े—बहन, तुम्हारी यह हँसी अच्छी नहीं।

चाँदरानी ने कहा—हँसी किस बात की बड़ी दीदी, मैं सच कह रही हूँ। चार नहीं, पचास स्त्रियाँ आवें। सेठ जी के पैदा किये एक चुहिया तो पैदा नहीं हो सकती, लड़का तो दूर की बात है। उसके लिये बल चाहिये—तपस्या चाहिये।

मझली सेठानी ने कहा—संसार में सब बली ही नहीं हैं। सब तपस्वी ही नहीं हैं।

चाँदरानी बोली—सब चार-चार ब्याह भी तो नहीं [illegible]ते।

छोटी सेठानी ने कहा—उन्होंने सन्तान के लिए ब्याह नहीं किया।

चाँदरानी ने खड़ी होते हुये कहा—तब साफ साफ क्यों नहीं कहते? पुण्डात्मा और चरित्रवान बनने का ढोंग क्यों रचते हैं?

बड़ी सेठानी ने कहा—पुरुष सब कर सकता है; पर स्त्री सब कुछ करने के लिये स्वाधीन नहीं है। उसे सब शोभा नहीं दे सकता।

चाँदरानी ने कहा—कुछ हो, मैं तो दूसरा ब्याह करूँगी। और खयाल है कि दूसरा ब्याह करने से मेरे सन्तान जरूर होगी।

अब सेठ जी अपने को सँभाल न सके। आगे बढ़ कर बोले—यही करना था, तो यहाँ क्यों आई। बाहर ही बाहर जो चाहतीं, सो कर लेतीं।

चाँदरानी—और यही करना था, तो तुमने मुझे यहाँ क्यों बुलाया। वाह! सन्तान के लिये तुम चार-चार ब्याह करो, और मैं एक भी नहीं?

चाँदरानी ने अपना सिर कुछ इस प्रकार झटका कि सेठ जी की तीनों स्त्रियों को हँसी आ गई। सेठ जी भी हँस पड़े और बोले—अच्छा कर लो। किसके साथ करोगी?

चाँदरानी ने अपने अञ्चल के भीतर से एक कागज निकाला, और कहा—मेरे विज्ञापन के उत्तर में सौ चिट्ठियाँ आई थीं। उनमें से मैंने इस कागज में दर्ज दस को चुना है। इन दस में से एक चुनना है। तुम सब की राय से आदमी चुना जायगा, तो अच्छा होगा। सब लोग सोच कर बोलिए।

सेठ जी ने चाँदरानी के हाथ से कागज ले लिया, उसे देखा। उनके शरीर में एक तूफान सा आ गया। वे काँप उठे। दोनों हाथों की क्रुद्ध अँगुलियों से कागज को उन्होंने टुकड़े टुकड़े कर डाला और चिल्ला कर कहा—चुड़ैल! पिशाचिनी! निकल मेरे घर से!!

चाँदरानी ने दृढ़ता के साथ जवाब दिया—भूत! पिशाच! निकल मेरे घर से!!

सेठ जी स्त्री के मुख से इस प्रकार की बातें सुनने के आदी न थे, क्रोधावेश में उन्होंने चाँदरानी के गाल पर एक थप्पड़ जमा दिया।

चाँदरानी ने भी उछल कर सेठ जी के गाल पर एक थप्पड़ मारा। फिर दोनों में गुत्थम-गुत्था होने लगी मझली और छोटी सेठानी मारे डर के वहाँ से खिसक गईं। बड़ी सेठानी ने चिल्लाना शुरू किया—दौड़ो, लोगों दौड़ो! सेठ की जान जाना चाहती है, इस बार उन्होंने मौत से ब्याह किया है।

चाँदरानी को समझाने के लिये उसके माता-पिता बुलाये गये; पर उसने उनकी एक न सुनी और कहा—माँ

बाप की आज्ञा मानने की भी एक सीमा होती है। पर तुम्हारी आज्ञा मैंने सीमा के बाहर मानी है। सेठ देवीचरण के साथ मेरा ब्याह कर देने के पश्चात् अब तुम उनके ऋणी नहीं रहे। तुमने मुझे पढ़ाया, लिखाया, सोचने-समझने की बुद्धि दी। इसके लिये मैं तुम्हारी कृतज्ञ हूँ। अब मुझे अपना रास्ता अपने आप बनाने दो। रही बात लोक-लाज की, सो उसे मैं कोई चीज नहीं समझती। जो लोक लाज चार चार ब्याह करने पर भी सेठ जी का कुछ नहीं बिगाड़ सकी, वह मेरा कुछ नहीं कर पायेगी। मैं बिना दूसरा ब्याह किये नहीं रहूँगी। जरूरत सिर्फ इस बात की है, कि कोई आदमी तैयार हो। कोई थोड़ा सा साहस करदे।

लाचार होकर चाँदरानी के माता पिता वापस चले गये। धीरे-धीरे यह चर्चा बहुत दूर तक फैल गई और चाँदरानी का भी पक्ष समर्थन होने लगा कि स्त्री ऐसी हालत में दूसरा ब्याह कर सकती है।

अन्त में सेठ देवीचरण ने चाँदरानी को एक कमरे में कैद कर लिया और उसे सब प्रकार का कष्ट देने लगे, परन्तु उसके सौंदर्य में कुछ ऐसा प्यार उत्पन्न करने वाली शक्ति थी, कि देवीचरण बहुत दिनों तक ऐसा न कर सके। एक दिन वे चाँदरानी के कमरे में अकेले चुपचाप गये और उससे बोले—चाँद, मेरे ऊपर दया करो।

चाँदरानी ने कहा—तुम्हीं मेरे ऊपर थोड़ी-सी दया क्यों नहीं करते? बाहरी पुरुष की जाति, लेना सब कुछ जानती है और देना कुछ नहीं!

देवीचरण ने कहा—तुम्हारी इन बेहूदी बातों के कारण मेरी किस कदर बदनामी हो रही है, किस प्रकार मेरी नाक कटी जा रही है—जानती हो?

'अरे! तुम्हें भी अपनी बदनामी और नेकनामी का ख्याल है।

'चाँदरानी, तुम क्या चाहती हो?'

'एक ब्याह और करके तुम्हें सन्तान-सुख देना!

'ऐसा सन्तान-सुख मैं नहीं चाहता। इस प्रकार की सन्तान को मैं शत्रु समझूँगा!'

इसी समय सेठ जी की तीनों स्त्रियाँ वहाँ आ गईं। बड़ी सेठानी ने कहा—ब्याह करो।

मझली ने कहा—ब्याह करो।

छोटी ने भी कहा—ब्याह करो।

चाँदरानी ने कहा—नहीं, अब तुम ब्याह न करो। अब हम लोगों को करने दो।

यह व्यङ्ग, यह उपदेश सुन कर देवीचरण तेज आँच पर चढ़े दूध की भाँति उबल पड़े। वे तड़ तड़ अपना सिर पीटने लगे।

बड़ी सेठानी ने उनका हाथ पकड़ लिया। मझली सेठानी ने भीगे रूमाल से उसका मुँह पोंछा। छोटी सेठानी ने कहा सेठ जी मैं तुम्हारी जगह पर होती तो इतनी परेशानी उठाने के बजाय इसे दूसरा ब्याह कर लेने को कह देती।

सेठ देवीचरण वहाँ से उठ कर बाग की ओर चले गये। बड़ी और मझली सेठानी उन्हीं के साथ गईं। छोटी सेठानी ने चाँदरानी से कहा—बहन, जो हो गया, सो हो गया, अब हठ छोड़ो। तुम्हारी बात वे कितनी बर्दाश्त करते हैं। मेरी तो कोई इतनी खुशामद करता, तो जान दे देती।

चाँदरानी ने कहा—'मैं क्या अनुचित कहती हूँ, जिन बातों के लिये उन्होंने चार ब्याह किये हैं, उन्हीं के लिये मैं भी करूँगी—बिलकुल उन्हीं बातों के लिये। जितने आजाद वे हैं, उतनी ही आजाद मैं भी हूँ।

छोटी सेठानी ने चाँदरानी को सब प्रकार से समझाया। कानूनी दाँव-पेंच भी उसे बतलाये। कहा, कि पुरुष ऐसा कर सकता है; पर स्त्री नहीं। उसकी इच्छा के अनुसार न चले, तो पति स्त्री को घर से निकाल सकता है। पुलिस की सहायता से ऐसी शादी रुका सकता है। उसे सब अधिकार है। स्त्री को कुछ नहीं; पर चाँदरानी ने कहा—नहीं, जो पुरुष मनमानी करता है, वह स्त्री के पूरे प्रेम का अधिकारी नहीं हो सकता मेरी सगाई पक्की हो चुकी थी। मेरा हृदय एक दूसरे प्रिय स्वजन के प्रेम-सूत्र में बँध चुका था। यह फूल एक दूसरी प्रतिमा पर चढ़ चुका था। वहाँ से यह पतित हुआ है—नहीं, पतित किया गया है। धन बल से गिराया गया है, तो अब अच्छी तरह क्यों न गिरे—यहीं तक क्यों गिर कर रह जाय। चाँद अपनी स्वाभाविक हँसी में हँसी और बोली मेरा वह प्रेमी आ गया है। मेरे साथ वह सब कुछ सहने को तैयार है। यह

हृदय तो उसको दिया जायगा; पर शरीर ?—हाँ, शरीर को सेठ जी ने खरीदा है; इसलिये यह शरीर और इस शरीर से जो कुछ उत्पन्न होगा, वह सेठ जी का कहलायेगा।

छोटी सेठानी ने बहुत उपन्यास पढ़े थे; पर ऐसी समस्या पर उसने कभी विचार न किया था। वह किंकर्तव्य विमूढ़ सी, बड़ी देर तक चुपचाप खड़ी रही, फिर न जाने क्या-क्या सोचती हुई वहाँ से चली गई।

[४]

दो वर्ष बाद चाँदरानी ने अपने आठ दिन के शिशु को ले जाकर चुपके से सेठ देवीचरण के सामने रख दिया। माँ के हाथों से अलग हो जाने के कारण बच्चा माँ-माँ करके रोने लगा। बड़ी, छोटी, और मझली तीनों सेठानियाँ, वहीं पास ही दूसरे बरामदे में बैठी बातें कर रहीं थीं। शिशु का रुदन सुन कर वे वहाँ दौड़ी आईं। इधर कई दिनों से उन्होंने चर्चा सुनी थी, कि चाँदरानी के एक शिशु उत्पन्न होने वाला है, पर कुछ पता न चलता था। आज एकाएक यह दृश्य देख कर, उन्हें चाँदरानी के साहस पर बेहद आश्चर्य हुआ। उनका ख्याल था, कि चाँदरानी ऐसी घटना को प्रकट नहीं कर सकती। जितना वह कहती है, उतना करने की क्षमता उसमें नहीं है; पर आज की घटना ने उनका विचार बदल दिया!

छोटी सेठानी ने दौड़ कर चाँदरानी से कहा—

पगली! मुझसे भी तूने सब बातें छिपाईं। अगर वे गुस्से में बच्चे को उठा कर फेंक दें, तो?

चाँदरानी ने कहा—यही तो देखना है; अगर वे बच्चे को फेंक देंगे, तो साबित हो जायगा कि वे सन्तान के लिये विवाह नहीं करते थे।

'यह तो साबित ही है!'

'अच्छी तरह साबित हो जायगा!'

'अगर बच्चा मर गया, तो?'

'तो ये भी उसी के साथ स्वर्ग लोक चले जायँगे। यह ऐसा-वैसा बच्चा नहीं है। अकेला कहीं नहीं जायगा। जहाँ जायगा, बाप को लेकर जायगा।

छोटी सेठानी ने कहा—उफ! तेरे दिल में जरा भी दया नहीं है। पति के लिये ऐसी बातें कहती है!

चाँदरानी ने कहा—पति! पति तो इन्हें मैंने समझा ही नहीं। इन्होंने मेरा हाड़-मांस खरीदा है। जैसे कोई बकरी खरीदता है। गनीमत यह हुई कि ये मुझे खा नहीं गये; पर बहुत से लोग बकरी को पालते हैं और उसके बच्चे को खा जाते हैं। शायद ये ऐसे ही लोगों में हों।

छोटी सेठानी ने चाँद के मुँह पर हाथ रख कर कहा—चुप!

बड़ी और मझली सेठानियों ने इसी समय आगे बढ़ कर चाँदरानी को घोर तिरस्कार के साथ देखा और कहा—अब क्या चाहती हो?

चाँदरानी—क्यों, क्या तुम मेरी चाह पूरी कर सकोगी?

दो में से एक ने भी कोई जवाब नहीं दिया। सेठ जी ने गुस्से से दाँत पीस कर कहा—चाँद! यह तेरा कलङ्क है।

चाँद ने कहा—कलङ्क किसमें नहीं है। मैं तुम्हारी कलङ्क हूँ, तुम मेरे कलङ्क हो। इस दुनिया में शायद कलङ्क ही शोभा है। जो कलङ्क हीन जीवन व्यतीत करने का प्रयत्न करता है, वह मिट जाता है। उसको [illegible] दो कौड़ी को भी नहीं पूछता।

सेठ देवीचरण ने कहा—इसे ले जाओ। मैं इसे नहीं देखना चाहता। गुस्से से मैं बेकाबू हो जाऊँ, ऐसा मौका न आने दो, नहीं तो यह अनर्थ अपना पूरा रङ्ग लायेगा।

चाँदरानी ने कहा—मैंने सब आगा-पीछा सोच लिया है। मैं सब के लिये तैयार हूँ।

देवी चरण ने बड़ी देर तक इधर-उधर देखा, दाँत पीसे। फिर काँपते हुये हाथों से उस रोते हुये शिशु को उठा लिया और उससे कहा—अजान बच्चे; अपने क्रोध का तुझे शिकार क्यों बनाऊँ। बड़ा हो [illegible], मुमकिन है, तू स्वयं सब सुने और समझे। बेहतर है कि तू जिन्दा रह और अपमान की आग में जल।

फिर उन्होंने चाँदरानी से कहा—चाँद, मेरे तीन ब्याह करने तक दुनिया अपने स्थान पर डटी थी; पर जिस तारीख को मैंने चौथा ब्याह किया, उसी तारीख को मुझे मालूम हो गया कि दुनिया शेषनाग के फन से खिसक कर कहीं और चली गई है। अब मैं देखता हूँ, कि जमाना बहुत बदल गया है और उसके साथ-साथ स्त्रियाँ भी बहुत बदल गई हैं। चार ब्याह की कौन कहे, अब जो एक ब्याह

करेगा, वह भी पछतायेगा। अब तुम सुख से मेरे प्रतिद्वन्दी को ले जाओ और मेरी छाती पर जितनी चाहो दाल दलो। जितनी नाक कटनी थी, कट गई। और अधिक क्या करेगी। अब सब सहूँगा। अब पाँचवा ब्याह नहीं करूँगा।

'प्रतिज्ञा करते हो कि नहीं करोगे?'

'हाँ! हाँ! हाँ!'

'अच्छा, जरा गौर से देखो! बचा मोम का है। लिटा देने से रोता है। बैठा देने से हँसता है।'

गाँधी जी का चित्र काढ़िए

प्रेषिका, श्रीमती रुक्मिणीदेवी विशारद, हैदराबद
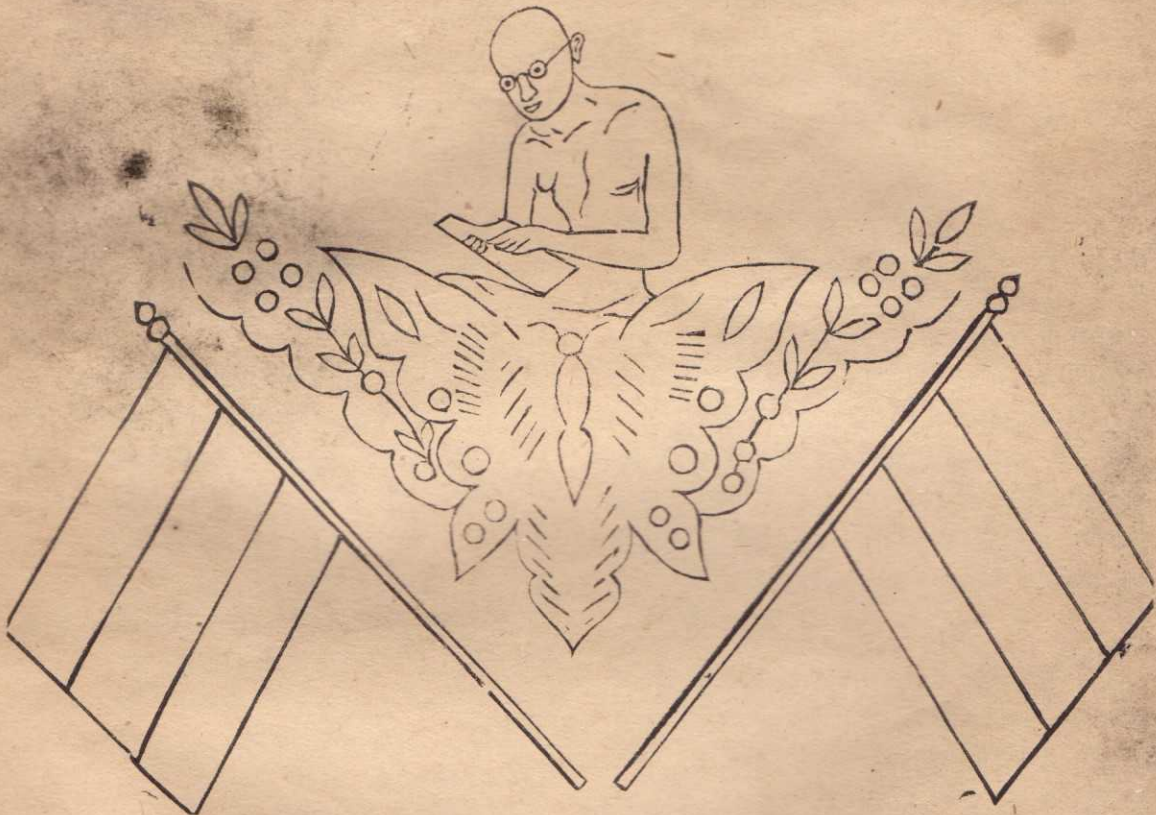
यह हर्ष की बात है कि सरकार ने महात्मा गाँधी को छोड़ दिया है। इस अवसर पर 'दीदी' अपनी पाठिकाओं को गाँधी जी का यह रेखा चित्र भेंट करती है।

यह सुन्दर कसीदा मेजपोश, तकिया के गिलाफों में काढ़ा जा सकता है। इस कसीदे को काले मखमल पर काढ़ कर फ्रेम में मढ़ाया भी जा सकता है। चित्र को फीके गुलाबी, ऐनक काले तीतरी को आस मानी, उसके अन्दर के बूटे तथा लकीरें कत्थई, किनारे की बेल हरी, बूटे बेल के लाल झण्डे की लकड़ियाँ कत्थई तथा झण्डे के रङ्ग कांग्रेसी (नारङ्गी, सफेद और हरा) काढ़ना चाहिये।

युद्ध के कारण सभी चीजें मँहगी हो उठी हैं और प्रायः सभी गृहिणियों को अपनी गृहस्थी चलाने में कठिनाई प्रतीत हो रही है। यह संकट कब तक बना रहेगा, इसको कौन बता सकता है ? युद्ध का अन्त करीब नहीं दिखता। अभी कम से कम यह पाँच साल और चलेगा। इस बीच में गृहस्थी-सञ्चालन में और भी कठिनाइयाँ उपस्थित हो सकती हैं। ऐसी दशा में प्रत्येक गृहिणी के लिये यह आवश्यक है कि वह बुद्धि से काम ले और जो कुछ भी उसके पास है उसी में अधिक से अधिक रस और स्वाद पैदा करे।

× × ×

गृहस्थी के काम की पुरानी चीजों को फेंकने के बजाय अब उनकी मरम्मत कराकर उन्हें फिर से काम में लाना उचित है। इङ्गलेंड आदि देशों में दर्जियों की ऐसी दूकानें खुल गई हैं जो पुराने कपड़ों को फिर से उलट कर सी देती हैं और उन्हें नया कर देती हैं। हमारे देश में भी ऊनी और रेशमी पोशाकों को नया रूप दिया जा सकता है। घर के पुराने सूती कपड़ों को धुला कर उनसे बच्चों की छोटी मोटी पोशाकें बनवाई जा सकती हैं। घर गृहस्थी के काम में आने वाली प्रत्येक पुरानी वस्तु को देखना चाहिये कि क्या उसे कोई नया रूप दिया जा सकता है।

× × ×

यह ग्रीष्म-काल है। इस ऋतु में शरीर में पानी की मात्रा अधिक पहुँचनी चाहिये। इसलिये गृहिणियों को तरह तरह के शरबतों की ओर ध्यान देना चाहिये। सबसे अच्छा शरबत सौंफ का होता है। एक चुटकी सौंफ, चार पाँच गोलमिर्च खूब महीन पीस कर अंदाज से चीनी और एक गिलास ठण्ढा पानी मिला दीजिये। यह शरबत बहुत ही स्वादिष्ट होता है और शरीर में तरावट रखता है। इसी प्रकार दही, बेल और पुदीने का शरबत बनाया जा सकता है।

× × ×

भोजन में भी कुछ सुधार और परिवर्तन की आवश्यकता है। मौसमी साग-भाजी और फलों का प्रयोग बढ़ा देना चाहिये और जो चीजें मँहगी मिलती हैं उनका प्रयोग कम कर देना चाहिये। यह भी सोचते रहना चाहिये कि खाने पीने की चीजों में नये नये स्वाद कैसे पैदा किये जा सकते हैं।

× × ×

ग्रीष्म काल में प्रातः और सायकाल दो बार स्नान करना चाहिये। बच्चों को भी दोनों वक्त नहलाना चाहिये। यदि नदी और तालाब में स्नान का मौका हो तो उसे हाथ से न जाने देना चाहिये। तैरना सीखने के लिये यह ऋतु सबसे अच्छी है। जिन्हें तैरना आता हो उन्हें इसका और भी अभ्यास करना चाहिये। इससे शरीर स्वस्थ और सुडौल होगा।

× × ×

लेखिकाओं से

'दीदी' की लेखिकाओं से निवेदन है कि यदि उनकी भेजी हुई कोई रचना 'दीदी' में न छपे तो वे नाराज न हों। हम सभी बहनों की रचनाओं को बड़े ध्यान से पढ़ते हैं और सभी को हम 'दीदी' में छापना चाहते हैं। परन्तु पृष्ठों की कमी के कारण हमारी यह इच्छा पूरी नहीं हो पाती।

× × ×

बेशक हम चुनाव करते हैं। जो रचना छोटी दिलचस्प, नयापन लिये हुए होती है उसे हम तुरन्त छाप देते हैं। जो लेखिकाएँ हमारे इस दृष्टि कोण का ध्यान रक्खेंगी उन्हें अपनी रचनाएँ 'दीदी' में बार बार प्रकाशित देखने को मिल सकती हैं।

× × ×

व्यक्ति गत

यह दुख की बात है कि पण्डित रामभजन लाल जी आर्य (कानपुर) की प्यारी पोती कु० कमला देवी का गत १४-५-४४ को स्वर्गवास हो गया।

तेज व बढ़िया सुगन्ध, गहरा रंग और कम दाम इन सबने मिलकर लिपटन की जाकूजा को बाजार भर की सर्वश्रेष्ठ चाय बना रक्खा है।

लिपटन की जाकूजा चाय

स र्वो त्त म भा र ती य चू रा चा य

LTK 84 J

अलकपरी

केशों में प्रतिमास ३-४ इञ्च वृद्धि !

६ महीने में एड़ी चुम्बी केश !

'अलकपरी' का कोर्स

पहले सप्ताह में रूसी-ख़ुश्की दूर हो जाती है।
दूसरे सप्ताह में केशों का झड़ना और उनके सिरों का फटना रुकता है।
तीसरे सप्ताह में नए केश उगते दिखाई देते हैं।
चौथे सप्ताह के अन्त तक केश ३-४ इञ्च बढ़ जाते हैं।
फिर प्रति मास इसी औसत से बढ़ते रहते हैं।

६ महीने में केश एड़ी-चुम्बी बन जाते हैं।

मूल्य एक शीशी का २॥) है जो एक महीने को काफ़ी होती है। डाक खर्च व पैकिङ्ग पृथक्। ३ शीशियों से अधिक डाक से नहीं भेजी जायँगी। अधिक के लिये ५) पेशगी भेजिए और अपने रेलवे स्टेशन का नाम लिखिये।

पता—'अलकपरी' नया कटरा, इलाहाबाद

श्रीनाथसिंह का नया उपन्यास

प्रजामण्डल

यदि आपने अब तक नहीं पढ़ा है तो अवश्य पढ़िए। बहुत थोड़ी प्रतियाँ बच रही हैं और युद्धकाल तक यह दुबारा नहीं छपेगा। जिसने पढ़ा है उसी ने इस उपन्यास की बड़ी तारीफ की है। कुछ सम्मतियाँ देखिए।

प्रसिद्ध लेखक श्री जैनेन्द्रकुमार जैन लिखते हैं—"भाई श्रीनाथसिंह जी, आपकी पुस्तक प्रजामण्डल मैंने पढ़ी। बेशक वह दिलचस्पी के लिहाज से बेजोड़ है।·········सच मानिए, आपकी कल्पना में शक्ति है और शैली में प्रसाद। इधर विश्लेषण की बीमारी जो फैली है उसके विरोध में आपकी पुस्तक एक चित्रात्मक स्वास्थ्य है।"

'विश्ववाणी' लिखती है—"श्री कन्हैयालाल मुन्शी के गुजराती उपन्यास के बाद रियासती समस्या को लेकर यह दूसरा उपन्यास हमारे पढ़ने में आया है। और यह कहने में हमें कोई संकोच नहीं कि सभी बातों में श्रीनाथसिंह का यह उपन्यास मुन्शी के उपन्यास से कहीं ऊँचा स्थान रखता है। पुस्तक इतनी रोचक है कि एक साँस में पढ़ जाने को जी करता है।"

'प्रताप' लिखता है—"उपन्यास आदि से अन्त तक रोचक और पठनीय है।"

'माधुरी' लिखती है—"इस उपन्यास में देशी राज्यों का अन्धेर, नरेशों की कामुकता, दीवानों के अत्याचार ज्वलंत भाषा में अंकित किये गये हैं।"

प्रजामण्डल का मूल्य १॥) है। दीदी के ग्राहकों से १)

मँगाने का पता—मैनेजर "दीदी" इलाहाबाद।

Printed and published by Shrinath Singh at the Didi Press Katra, Allahabad